सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 303, नई दिल्ली । शनिवार, 11 जनवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 सफदरजंग अस्पताल में स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर एक प्रसिद्ध संस्थान है

06 जनसंख्या वृद्धि में गिरावट देश के लिए खतरा या सकारात्मक बदलाव?

08 जहाज निर्माण और मरम्मत का हब बनेगा पारादीप, 4 हजार करोड़ का होगा

# केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी का एलान
## ऑटोमोबाइल क्षेत्र में नंबर वन देश बनना है लक्ष्य

संजय बाटला

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने देश के ऑटो क्षेत्र की पिछले कुछ वर्षों में हुई प्रगति पर रोशनी डाला। जिसके दौरान यह इस क्षेत्र में तीसरी सबसे बड़ी खिलाड़ी बन गई। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य नंबर एक बनना है।

**नई दिल्ली।** केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने देश के ऑटो क्षेत्र की पिछले कुछ वर्षों में हुई प्रगति पर रोशनी डाला। जिसके दौरान यह इस क्षेत्र में तीसरी सबसे बड़ी खिलाड़ी बन गई। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य नंबर एक बनना है।

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री ने नेशनल ऑटोमोटिव टेस्ट ट्रैक्स (एनएटीआरएक्स) में गुरुवार को एक समारोह को संबोधित करते हुए कहा, "...हमारा नंबर दुनिया में सातवां था, लेकिन हम ऑटोमोबाइल क्षेत्र में तीसरे स्थान पर हैं...हमने जापान को पीछे छोड़ दिया और अब हमारा नंबर तीसरा है।"

गडकरी ने कहा, "तालिका के शीर्ष पर मौजूद अमेरिकी ऑटोमोबाइल सेक्टर का आकार 78 लाख करोड़ रुपये का था। जबकि चीन का उद्योग आकार 47 लाख करोड़ रुपये था।"

उन्होंने कहा, "जब मैंने मंत्री का कार्यभार संभाला था, तब उद्योग का आकार 7.5 लाख करोड़ रुपये था और आज इसका आकार 22 लाख करोड़ रुपये है। और यह वह उद्योग है, जिसने अब तक 4.5 करोड़ नौकरियां पैदा की हैं - जो देश में सबसे ज्यादा है।"

उन्होंने कहा, "यह ऑटोमोबाइल उद्योग है, जो राज्य सरकार और भारत सरकार को जीएसटी के हिस्से के रूप में अधिकतम राजस्व दे रहा है।"

गडकरी ने कहा कि उद्योग का निर्यात अधिकतम है और "हमारा सपना भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग को विश्व में नंबर एक बनाना है।"

इससे पहले, हाल ही में केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने अगले पांच सालों में दिल्ली को प्रदूषण से मुक्त करने का वादा किया है। उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी के परिवहन नेटवर्क को विकसित करने और आने वाले दिनों में प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए 12,500 करोड़ रुपये के निवेश का एलान किया। उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी के लिए 1200 करोड़ रुपये के अतिरिक्त सीआरआईएफ फंड का भी एलान किया।

गडकरी ने बताया कि दिल्ली में प्रदूषण कम करने के लिए सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) कौन-कौन सी परियोजनाएं शुरू करेगा। उन्होंने कहा, "दिल्ली वायु प्रदूषण और ट्रैफिक जाम से बहुत परेशान है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सड़क निर्माण मंत्रालय ने दिल्ली को प्रदूषण से मुक्त करने और भीड़भाड़ कम करने के लिए कई परियोजनाएं शुरू की हैं और उन्हें लागू किया है।" उन्होंने कहा कि नई सड़क परियोजनाओं से दिल्ली में प्रवेश करने वाले वाहनों का दबाव कम करने में मदद मिलेगी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

# राष्ट्रीय जलमार्गों के विकास से लिए पांच वर्षों में होगा 50 हजार करोड़ का निवेश

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा- 2030 तक एनडब्ल्यू 2, एनडब्ल्यू 16 और आईबीपीआर के विकास के लिए 3,000 करोड़ रुपए से से अधिक का निवेश किया जाएगा। इस दौरान उन्होंने कहा, नई राष्ट्रीय जलमार्गों के विकास और ग्रीन शिपिंग पहलों के लिए ₹23,000 करोड़ से अधिक का आवंटन किया गया है। वहीं राष्ट्रीय जलमार्गों के फेयरवे को बनाए रखने के लिए 8 एम्फीबियन ड्रेजर और 4 कटर सक्शन ड्रेजर की घोषणा की गई।

**नई दिल्ली।** इनलैंड वाटरवेज डेवलपमेंट काउंसिल (आईडब्ल्यूडीसी), जो देश में आंतरिक जलमार्ग नेटवर्क पर नीति निर्णयों का सर्वोच्च निकाय है, ने शुक्रवार को अगले पांच वर्षों में 50,000 करोड़ से अधिक के निवेश की घोषणा की। राष्ट्रीय जलमार्गों के साथ इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देने के लिए की यह घोषणा आईडब्ल्यूडीसी की दूसरी बैठक में की गई।

**सर्बानंद सोनोवाल की अध्यक्षता में बैठक**

यह घोषणा असम के काजीरंगा में आयोजित इनलैंड वाटरवेज अथॉरिटी ऑफ इंडिया (आईडब्ल्यूएआई) में की गई। इसमें 21 आंतरिक जलमार्गों के माध्यम से 1,400 करोड़ से अधिक की नई पहलों की घोषणा की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल और असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस बैठक की अध्यक्षता केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने किया।

इस बैठक में एक प्रमुख नीति पहल, 'रिवेरिन कम्युनिटी डेवलपमेंट स्कीम' का प्रस्ताव दिया गया। इसका उद्देश्य तटीय समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाना है, जलमार्गों के आसपास बुनियादी ढांचे का विकास करना, व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा देना, कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना और समुदायों के पारंपरिक नदी ज्ञान को अपग्रेड करना है।

**'एक हजार ग्रीन वेसल्स लॉन्च करने का लक्ष्य'**

इस मौके पर सोनोवाल ने कहा, हम आंतरिक जलमार्गों के समर्थन प्रणाली को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं ताकि हम रेलवे और सड़कों पर दबाव कम कर सकें। साथ ही यात्रियों और माल ऑपरेटरों के लिए एक टिकाऊ, आर्थिक और प्रभावी परिवहन प्रणाली प्रदान कर सकें। आईडब्ल्यूडीसी में, हमने विकास के अवसरों को अनलॉक करने के लिए समाधान पेश किए हैं। इस संदर्भ में, हमने 1,000 ग्रीन वेसल्स लॉन्च करने का लक्ष्य रखा है।

केंद्रीय मंत्री ने आईडब्ल्यूडीसी के रोजगार सृजन और कौशल प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करते हुए कहा, बैठक में आंतरिक जलमार्ग परिवहन (आईडब्ल्यूटी) के उन्नयन के लिए प्रमुख परियोजनाओं का प्रस्ताव रखा गया है। सरकार जलमार्गों पर शिपबिल्डिंग और शिप रिपेयर सुविधाएं स्थापित करने की योजना बना रही है। इससे लॉजिस्टिक्स लागत में कमी आएगी, सहायक उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा और तटीय समुदायों को रोजगार के अवसर मिलेंगे।

# टर्मिनल दो पर अत्याधुनिक सुविधाओं का होगा विकास, भविष्य के लिए किया जाएगा तैयार

इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के टर्मिनल 2 का कायाकल्प होने जा रहा है। करीब चार दशक पुराने इस टर्मिनल को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जाएगा। पुनर्निर्माण के बाद यहां यात्रियों को बोर्डिंग ब्रिज स्वचालित डॉकिंग प्रणाली अत्याधुनिक डिस्प्ले बोर्ड स्मार्ट वाशरूम और बेहतर फायर फाइटिंग सिस्टम जैसी सुविधाएं मिलेंगी। इस बदलाव का मकसद बढ़ती घरेलू उड़ानों की संख्या को देखते हुए टर्मिनल 2 की क्षमता बढ़ाना है।

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** करीब चार दशक पुराने आईजीआई एयरपोर्ट के टर्मिनल 2 समय के हिसाब से विकसित किया जाएगा। आईजीआई एयरपोर्ट संचालन से जुड़ी एजेंसी डायल का कहना है कि भविष्य की जरूरत के हिसाब से सुविधाओं के विकास के लिए इस वर्ष टर्मिनल 2 को चार से छह महीने के लिए बंद करना पड़ेगा। इस बीच यहां से संचालित होने वाली उड़ानें टर्मिनल 1 से संचालित होंगी।

डायल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विदेह कुमार जयपुरियार ने कहा कि चार दशक पुराने टर्मिनल का पुनर्निर्माण समय की आवश्यकता है। यह पुनर्निर्माण मुख्य बुनियादी ढांचे को उन्नत करने, संचालन की दक्षता में सुधार करने और यात्रियों के आराम को बढ़ाने से समग्र अनुभव को बेहतर बनाने में मददगार साबित होगा।

उन्होंने कहा कि टर्मिनल की यात्री क्षमता वित्तीय वर्ष 2025-26 तक अपनी चरम सीमा तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में ये सुधार घरेलू यात्रियों के बढ़ते हवाई यात्रा की मांग का समर्थन करने के लिए महत्वपूर्ण होंगे।

**क्या होगा बदलाव**

अभी दिल्ली के तीनों टर्मिनलों में सबसे पुराना टर्मिनल दो ही है। पुनर्निर्माण के बाद यहां भी टर्मिनल 1 व 3 के समान यात्रियों को बोर्डिंग ब्रिज की सुविधा मिलेगी। बोर्डिंग ब्रिज से वायुयान के डाकिंग के लिए देश में पहली बार यहां स्वचालित डाकिंग प्रणाली का विकास किया जाएगा। इससे डॉकिंग के दौरान बोर्डिंग ब्रिज व विमान की दूरी व ऊंचाई के बीच समन्वय पूरी तरह स्वचालित होगा।

अत्याधुनिक डिस्प्ले बोर्ड में यात्री उड़ानों की समय सारिणी देख सकेंगे। स्मार्ट वाशरूम विकसित होगा। टर्मिनल की सीलिंग को बदला जाएगा। फर्श को भी नए तरीके से विकसित किया जाएगा। टर्मिनल के फायर फाइटिंग सिस्टम को भी दुरुस्त किया जाएगा।

टर्मिनल के फोरकोर्ट एरिया में आकर्षक केनोपी की सुविधा होगी। नए नए साइनेज बोर्ड लगेंगे। एयरसाइड में भी बदलाव होगा। एप्रन एरिया को अत्याधुनिक तकनीक व जरुरतों के हिसाब से विकसित किया जाएगा।

**बदलाव क्यों है जरूरी**

देश में घरेलू उड़ानों की संख्या बढ़ रही है। नए नए एयरपोर्ट बन रहे हैं। नए बन रहे एयरपोर्ट से उड़ानों का जुड़ाव नई दिल्ली से हर हाल में रहता है। अभी आईजीआई एयरपोर्ट से रोजाना करीब 1300 उड़ानें संचालित हो रही हैं। इस संख्या के आने वाले वित्तीय वर्ष में 1500 तक पहुंचने का अनुमान है। इसे देखते हुए ही डायल ने टर्मिनल दो को पूरी क्षमता के साथ संचालित करने का निर्णय लिया है। पुनर्निर्माण के बाद यहां से करीब 400 उड़ानें संचालित की जा सकेंगी।

# सम्मान निधि, फ्री सफर... जब बस में महिलाओं और पुरुषों के बीच दिल्ली की योजनाओं को लेकर हो गई बहस

*दिल्ली में विधानसभा चुनाव के मद्देनजर महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा का लाभ पहला सवाल बना। बुजुर्ग इस कदम से नाराज दिखे, क्योंकि वे सीट पाने में असमर्थ हैं। महिलाओं को ऑटो-टैक्सी छोड़ बस में सफर से पैसों की बचत हो रही है।*

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली:** दिल्ली यूपी बॉर्डर पर स्थित हर्ष विहार बस स्टॉप पर दोपहर के 1:30 बजे थे। बस स्टॉप पर खड़ी सवारियों की निगाहें रूट नंबर 234 बस पर टिकी थीं। एक बस जैसे ही स्टॉप पर आकर खड़ी हुई हर कोई उस बस की तरफ दौड़ा, लेकिन जैसे ही ड्राइवर ने बस के आगे पीछे लगे बोर्ड ऑन किए तो पता चला यह बस तो जहांगीरपुरी जाएगी। इसी दौरान रूट नंबर 234 पर चलने वाली बस, स्टॉप पर आकर खड़ी हो गई। सवारियां ज्यादा नहीं थीं इसलिए हर किसी को सीट मिल गई। यहां से बस जैसे ही गगन सिनेमा, बैंक कॉलोनी और नंद नगरी डिपो तक पहुंची फुल हो गई।

**महिलाओं के फ्री सफर से बुजुर्ग नाराज!**

दिल्ली में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है, इस बार दिल्ली के लोग विधानसभा की चाबी किसे सौंपेंगे? यह सवाल पूछते ही पीछे वाली सीट पर बैठे बुजुर्ग ने उलटा सवाल करते हुए कहा कि यह बात हमसे क्यों पूछ रहे हो? बुजुर्ग ने आगे वाली सीट पर बैठी महिलाओं की ओर इशारा करते हुए कहा कि यह सवाल इनसे पूछा जाना चाहिए था, क्योंकि बस में फ्री यात्रा का सबसे ज्यादा फायदा तो महिलाओं को ही मिल रहा है।

बुजुर्ग ने कहा कि इसी बस को नहीं बल्कि किसी भी बस को देख लीजिए हर बस महिला स्पेशल लगने लगी है। कितना भी बुजुर्ग क्यों न हो बसों में उन्हें सीट मिलना मुश्किल है। बुजुर्ग यहीं पर ही नहीं रुके उन्होंने कहा कि यह फ्री वाला लॉलीपॉप कब तक चलेगा? दो बार से दिल्ली में सरकार रहने के बाद भी महिलाओं को सम्मान निधि देने की घोषणा नहीं की, अब दिल्ली की सत्ता खिसकती नजर आ रही है तो अब फ्री बिजली, फ्री पानी और बस यात्रा फ्री से एक कदम आगे बढ़ाते हुए हर महिला को 1100 रुपये सम्मान निधि देने की घोषणा कर डाली।

> बुजुर्ग की बातों के सिलसिले को तोड़ते हुए उनके बराबर में बैठे मुसाफिर ने कहा कि अरे भाई महिलाओं की इतनी ही चिंता है तो पंजाब में तो उन्हीं की सरकार है, लेकिन वहां अब तक महिलाओं को सम्मान निधि नहीं दी गई। उन्होंने मध्य प्रदेश सहित कई राज्यों का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां पहले से महिलाओं को अलग अलग नामों से सम्मान निधि दी जा रही है, लेकिन बीजेपी दिल्ली में अपने ही कामों को भुनाने में नाकाम साबित हो रही है।

**'तो पंजाब में क्यों नहीं मिल रही सम्मान निधि?'**

बुजुर्ग की बातों के सिलसिले को तोड़ते हुए उनके बराबर में बैठे मुसाफिर ने कहा कि अरे भाई महिलाओं की इतनी ही चिंता है तो पंजाब में तो उन्हीं की सरकार है, लेकिन वहां अब तक महिलाओं को सम्मान निधि नहीं दी गई। उन्होंने मध्य प्रदेश सहित कई राज्यों का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां पहले से महिलाओं को अलग अलग नामों से सम्मान निधि दी जा रही है, लेकिन बीजेपी दिल्ली में अपने ही कामों को भुनाने में नाकाम साबित हो रही है।

चाहे जो हो इस बार दिल्ली का सिंहासन डोल रहा है, इसलिए सिंहासन पर काबिज पार्टी की नींद उड़ी हुई है। चुनावी चर्चा करते हुए कब शास्त्री नगर बस स्टैंड आ गया दोनों मुसाफिरों को पता नहीं चला। शास्त्री नगर बस स्टैंड से बस चलने ही वाली थी की दोनों मुसाफिर शोर मचाते हुए जल्दी से पीछे वाले गेट पर पहुंचे। शोर मचाए जाने पर ड्राइवर ने पीछे वाला दरवाजा खोल दिया। जिससे दोनों मुसाफिर बस से उतर गए।

**'जरूरतमंद महिलाओं का बचता है पैसा'**

बातचीत के सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए कंडक्टर के पीछे वाली सीट पर बैठी महिला ने कहा कि महिलाओं के लिए बसों में फ्री यात्रा करने से निश्चित रूप से महिलाओं की भीड़ बढ़ी है। उन्होंने बताया कि ऐसा नहीं महिलाएं पहले घरों से नहीं निकलती थीं, लेकिन तब वे आने जाने के लिए ऑटो और टैक्सी आदि का इस्तेमाल करती थी। महिलाओं को बसों में आसानी से सीट मिल जाती है इसलिए महिलाओं ने ऑटो और टैक्सी आदि को छोड़कर अब बसों में सफर करना शुरू कर दिया है। इससे पैसों की भी बचत हो रही है।

महिला ने अपना खुद का उदाहरण देते हुए कहा कि वह मीत नगर रहती हैं और अशोक विहार स्थित हॉस्पिटल में कॉन्ट्रैक्ट पर जॉब करती हैं। हर महीने बस टिकट से उसे कम से कम एक हजार रुपये का फायदा हो रहा है। ऊपर से पानी और बिजली का बिल भी नहीं भरना पड़ता। इतने सारे फायदे गिनाने पर बराबर वाली सीट पर बैठा युवक खुद को बोलने से रोक नहीं पाया। युवक ने कहा कि मेडम कभी वक्त मिले तो एक बार मुंडका का इलाका घूम कर देखना। कई जगहों पर तो गड्ढों के बीच में सड़के ढूंढनी पड़ेगी। सब कुछ फ्री लेने वालों को यह भी देखना चाहिए कि विकास के मामले में दिल्ली आखिर जा कहां रही है?

# तिल के तेल के बारे में आपने बहुत कम सुना होगा। पता है क्यों...??

तिल के तेल का प्रचार कंपनियाँ इसलिए नहीं करती क्योंकि इसके गुण जान लेने के बाद आप उनके द्वारा बेचा जाने वाला तरल चिकना पदार्थ जिसे वह तेल कहते हैं, आप एकदम लेना बंद कर देंगे और उनकी दुकान बंद हो जायेगी।

**जानिये तिल के तेल के चमत्कारी अद्भुत गुण...**

(1). तिल के तेल में इतनी ताकत होती है कि यह पत्थर को भी चीर देता है!

**प्रयोग करके देखें....**

आप पर्वत का पत्थर लीजिए और उसमे कटोरी के जैसा खडडा बना लिजिए, उसमे पानी, दूध, घी या तेजाब संसार में कोई सा भी कैमिकल, एसिड डाल दीजिए,

पत्थर में वैसा की वैसा ही रहेगा, कही नहीं जायेगा...

लेकिन अगर आप ने उस कटोरी नुमा पत्थर में तिल का तेल डाल दिया तो...

**उस खड्डे में भर दीजिये..**

2 दिन बाद आप देखेंगे कि तिल का तेल पत्थर के अन्दर भी प्रवेश करके, पत्थर के नीचे आ जायेगा।

यह होती है तिल के तेल की ताकत.!

इस तेल की मालिश करने से, ये हड्डियों को पार करता हुआ, हड्डियों को मजबूती प्रदान करता है।

तिल के तेल के अन्दर फास्फोरस होता है जो कि हड्डियों की मजबूती का अहम भूमिका अदा करता है।

तिल का तेल ऐसी वस्तु है जो अगर कोई भी भारतीय चाहे तो थोड़ी सी मेहनत के बाद आसानी से प्राप्त कर सकता है।

तब उसे किसी भी कंपनी का तेल खरीदने की आवश्यकता ही नही होगी।

तिल खरीद लीजिए और किसी भी तेल निकालने वाले से उनका तेल निकलवा लीजिए।

तैल शब्द की व्युत्पत्ति तिल शब्द से ही हुई है। जो तिल से निकलता वह है तैल अर्थात तेल का असली अर्थ ही है "तिल का तेल"

तिल के तेल का सबसे बड़ा गुण यह है कि यह शरीर के लिए औषधि का काम करता है..

चाहे आपको कोई भी रोग हो यह उससे लड़ने की क्षमता शरीर में विकसित करना आरंभ कर देता है।

यह गुण इस पृथ्वी के अन्य किसी खाद्य पदार्थ में नहीं पाया जाता।

सौ ग्राम सफेद तिल से 1000 मिलीग्राम कैल्शियम प्राप्त होता हैं।

बादाम की अपेक्षा तिल में छः गुना से भी अधिक कैल्शियम है।

काले और लाल तिल में लौह तत्वों की भरपूर मात्रा होती है जो रक्तअल्पता के इलाज़ में कारगर साबित होती है।

तिल में उपस्थित लेसिथिन नामक रसायन कोलेस्ट्रोल के बहाव को रक्त नलिकाओं में बनाए रखने में मददगार होता है।

तिल के तेल में प्राकृतिक रूप में उपस्थित सिस्मोल एक ऐसा एंटी-ऑक्सीडेंट है जो इसे ऊँचे तापमान पर भी बहुत जल्दी खराब नहीं होने देता।

आयुर्वेद चरक संहिता में इसे पकाने के लिए सबसे अच्छा तेल माना गया है।

तिल में विटामिन-सी छोड़कर वे सभी आवश्यक पौष्टिक पदार्थ होते हैं जो अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक होते हैं।

तिल विटामिन-बी और आवश्यक फैटी एसिड्स से भरपूर है।

इसमें मीथोनाइन और ट्रायप्टोफन नामक दो बहुत महत्त्वपूर्ण एमिनो एसिड्स होते हैं जो चना, मूँगफली, राजमा, चौला और सोयाबीन जैसे अधिकांश शाकाहारी खाद्य पदार्थों में नहीं होते।

ट्रायोप्टोफन को शांति प्रदान करने वाला तत्व भी कहा जाता है जो गहरी नींद लाने में सक्षम है।

यही त्वचा और बालों को भी स्वस्थ रखता है।

मीथोनाइन लीवर को दुरुस्त रखता है और कॉलेस्ट्रोल को भी नियंत्रित रखता है।

तिल का बीज स्वास्थ्यवर्द्धक वसा का बड़ा स्त्रोत है जो चयापचय को बढ़ाता है।

यह कब्ज भी नहीं होने देता।

तिल के बीजों में उपस्थित पौष्टिक तत्व, जैसे कैल्शियम और आयरन त्वचा को कांतिमय बनाए रखते हैं।

तिल में न्यूनतम सैचुरेटेड फैट होते हैं इसलिए इससे बने खाद्य पदार्थ उच्च रक्तचाप को कम करने में मदद कर सकता है।

सीधा अर्थ यह है की यदि आप नियमित रूप से स्वयं द्वारा निकलवाए हुए शुद्ध तिल के तेल का सेवन करते हैं तो आप के बीमार होने की संभावना ही ना के बराबर रह जाएगी।

जब शरीर बीमार ही नही होगा तो उपचार की भी आवश्यकता नही होगी।

यही तो आयुर्वेद है..

आयुर्वेद का मूल सिद्धांत यही है कि उचित आहार विहार से ही शरीर को स्वस्थ रखिए ताकि शरीर को औषधि की आवश्यकता ही ना पड़े।

एक बात का ध्यान अवश्य रखिएगा कि बाजार में कुछ लोग तिल के तेल के नाम पर अन्य कोई तेल बेच रहे हैं.. जिसकी पहचान करना मुश्किल होगा।

ऐसे में अपने सामने निकाले हुए तेल का ही भरोसा करें।

यह काम थोड़ा सा मुश्किल ज़रूर है किंतु पहली बार की मेहनत के प्रयास स्वरूप यह शुद्ध तेल आपकी पहुँच में हो जाएगा।

जब चाहें जाएँ और तेल निकलवा कर ले आयें।

तिल में मोनो-सैचुरेटेड फैटी एसिड होता है जो शरीर से बैड कोलेस्ट्रोल को कम करके गुड कोलेस्ट्रोल यानि एच.डी.एल. (HDL) को बढ़ाने में मदद करता है।

यह हृदय रोग, दिल का दौरा और धमनी कलाकाठिन्य या एथेरोस्क्लेरोसिस (Atherosclerosis) के संभावना को कम करता है।

**कैंसर से सुरक्षा प्रदान करता है...**

तिल में सेसमीन (Sesamin) नाम का एन्टीऑक्सिडेंट (Anti Oxidant) होता है जो कैंसर के कोशिकाओं को बढ़ने से रोकने के साथ-साथ है और उसके जीवित रहने वाले रसायन के उत्पादन को भी रोकने में मदद करता है।

यह फेफड़ों का कैंसर, पेट के कैंसर, ल्यूकेमिया, प्रोस्टेट कैंसर, स्तन कैंसर और अग्नाशय के कैंसर के प्रभाव को कम करने में बहुत मदद करता है।

**तनाव को कम करता है...**

इसमें नियासिन (Niacin) नाम का विटामिन होता है जो तनाव और अवसाद को कम करने में मदद करता है।

**हृदय के मांसपेशियों को स्वस्थ रखने में मदद करता है-**

तिल में ज़रूरी मिनरल जैसे कैल्सियम, आयरन, मैग्नेशियम, जिन्क, और सेलेनियम होता है जो हृदय के मांसपेशियों को सुचारू रूप से काम करने में मदद करता है और हृदय को नियमित अंतराल में धड़कने में मदद करता है।

**शिशु के हड्डियों को मजबूती प्रदान करता है-**

तिल में डायटरी प्रोटीन और एमिनो एसिड होता है जो बच्चों के हड्डियों के विकसित होने में और मजबूती प्रदान करने में मदद करता है।

उदाहरणस्वरूप 100 ग्राम तिल में लगभग 18 ग्राम प्रोटीन होता है, जो बच्चों के विकास के लिए बहुत ज़रूरी होता है।

गर्भवती महिला और भ्रूण (Foetus) को स्वस्थ रखने में मदद करता है-

तिल में फोलिक एसिड होता है जो गर्भवती महिला और भ्रूण के विकास और स्वस्थ रखने में मदद करता है।

आयुर्वेद के अनुसार इस तेल से मालिश करने पर शिशु आराम से सोते हैं।

अस्थि-सुषिरता या ओस्टीयोपोरोसिस (Osteoporosis) से लड़ने में मदद करता है-

तिल में जिन्क और कैल्शियम होता है जो अस्थि-सुषिरता से संभावना को कम करने में मदद करता है।

**मधुमेह के दवाईयों को प्रभावकारी बनाता है-**

डिपार्टमेंट ऑफ बायोथेक्सनॉलॉजी विनायक मिशन यूनवर्सिटी, तमिलनाडु के अध्ययन के अनुसार यह उच्च रक्तचाप को कम करने के साथ साथ इसका एन्टी ग्लिसेमिक प्रभाव रक्त में ग्लूकोज़ के स्तर को 36%कम करने में मदद करता है।

जब यह मधुमेह विरोधी दवा ग्लिबेक्लेमाइड (Glibenclamide) से मिलकर काम करता है।

इसलिए टाइप-2 मधुमेह (Type 2 diabetic) रोगी के लिए यह मददगार साबित होता है।

दूध के तुलना में तिल में तीन गुना कैल्शियम रहता है।

इसमें कैल्शियम, विटामिन-बी और ई, आयरन और ज़िंक, प्रोटीन की भरपूर मात्रा रहती है और कोलेस्टरोल बिल्कुल नहीं रहता है।

तिल का तेल ऐसा तेल है, जो सालों तक खराब नहीं होता है, यहाँ तक कि गर्मी के दिनों में भी वैसा की वैसा ही रहता है।

तिल का तेल कोई साधारण तेल नहीं है।

इसकी मालिश से शरीर काफी आराम मिलता है।

यहां तक कि लकवा जैसे रोगों तक को ठीक करने की क्षमता रखता है।

# आधी आबादी ने मेट्रो में भरी पूरी रफ्तार

## लखनऊ में हर स्टेशन पर दिख रही महिलाओं की काबिलियत

यूपी मेट्रो में कुल 94 महिलाएं एससीटीओ का जिम्मा संभाल रही हैं। वहीं, 42 महिलाएं लखनऊ मेट्रो के संचालन की बागडोर संभाल रही हैं। देखें एक रिपोर्ट:

नारी का जज़्बा अब हर राह चमकाता है, लखनऊ मेट्रो में उसका दम भी नजर आता है। मेट्रो में महिलाओं की सशक्त भूमिका ने शहर के विकास में नया आयाम जोड़ा है। वह न केवल मेट्रो संचालन में सक्रिय हैं, बल्कि तकनीकी और प्रशासनिक जिम्मेदारियां भी बखूबी निभा रही हैं। मेट्रो के कई प्रमुख स्टेशनों पर महिला ऑपरेटर्स और स्टाफ अपनी दक्षता और समर्पण से यात्रियों का भरोसा जीत रही हैं। उत्तर प्रदेश मेट्रो रेल कॉरपोरेशन में वर्तमान में 241 महिला कर्मचारी हैं। इनमें लखनऊ मेट्रो में 117, कानपुर में 67 और आगरा में 57 महिलाएं कार्यरत हैं, जो आर्किटेक्चर, एचआर, फाइनेंस, ऑपरेशन, सिविल समेत अन्य विभागों में सेवाएं दे रहीं हैं।

वहीं, महिला एससीटीओ की बात करें तो कुल 94 महिलाएं यूपी मेट्रो की बागडोर संभाल रही हैं। लखनऊ मेट्रो में 42 महिला एससीटीओ हैं, जो ट्रेन संचालन से लेकर स्टेशन कंट्रोलिंग का जिम्मा संभाले हुए हैं। अमर उजाला से बातचीत में इन महिलाओं ने अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि कैसे सर्दी के मौसम में सुबह छह बजे से ही वह यात्रियों की सेवा के लिए तैयार रहती हैं। कहा कि यात्रियों का भरोसा ही उन्हें शक्ति देता है। इसे बनाए रखने के लिए वह हर मुश्किलों से जूझती है।

**सपनों को रफ्तार दे रही यूपी मेट्रो**

हजरतगंज मेट्रो स्टेशन की कंट्रोलर अंजलि ने बताया कि जब वह पहली बार मेट्रो के केबिन में बैठीं तो उनके अंदर उत्साह और जिम्मेदारी का अनोखा मिश्रण था। महिलाएं हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं तो उनका भी सपना कुछ अलग करना था। उन्हें गर्व है कि वह यूपी मेट्रो का हिस्सा हैं और इसका संचालन कर रही हैं।

**परिवार और मेट्रो दोनों संभालती हैं**

ट्रेन ऑपरेटर आंचल बताती हैं कि महिलाओं में घर और ऑफिस दोनों संभालने की क्षमता होती है। लखनऊ मेट्रो में महिला कर्मचारियों को ऐसा वातावरण दिया जाता है कि जहां वह अपने काम और परिवार दोनों के साथ न्याय कर सकें। सर्दी में सुबह जागने का मन नहीं करता, लेकिन यात्रियों की जिम्मेदारी है तो छह बजे स्टेशन पहुंच जाती हैं। यह नौकरी उन्हें आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाती हैं।

**यात्रियों की सेवा और सुरक्षा की मिसाल**

एससीटीओ आकांक्षा अपने कार्यक्षेत्र के अनुभव को साझा करते हुए बताती हैं कि कैसे वह पूरा स्टेशन संभालती हैं और यात्रियों की मदद भी करती हैं। मेट्रो यात्रा के दौरान यात्रियों को प्राथमिक उपचार देना हो या फिर खोए सामान को सुरक्षित लौटाना। वह हर चुनौती के लिए तैयार रहती हैं। आकांक्षा ने बताया कि कैसे उन्होंने अपनी शिफ्ट के दौरान एक बेहोश यात्री का प्राथमिक उपचार भी किया।

लखनऊ मेट्रो की जन संपर्क अधिकारी हितेश चांदना का कहना है कि महिला कर्मचारियों को हर स्तर पर प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे न केवल रोजगार के अवसर बढ़े हैं, बल्कि महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने का सपना भी साकार हो रहा है। यह पहल नारी सशक्तीकरण और शहर के आधुनिक परिवहन में महिलाओं की भूमिका दर्शाने वाला एक अनुकरणीय कदम है।

# ठंड की 'महाऔषधि' अदरक इन बड़े रोगों में है लाजवाब दवा

1. सूखी खांसी में अदरक के छोटे- छोटे टुकड़ों को मुंह में रखकर चूसने से बहुत जल्दी आराम मिलता है।

2. अदरक के जूस में गठिया रोग को भी ठीक करने की क्षमता होती है। इसके सूजन को खत्म करने वाले गुण गठिया और थायराइड से ग्रस्त मरीजों के लिए बहुत फायदेमंद हैं।

3. अदरक को सर्दी से बचाने में सबसे अधिक कारगर माना जाता है। यह सर्दी पैदा करने वाले बैक्टीरिया को खत्म करने के साथ-साथ सर्दी फिर से आपको परेशान न कर पाए, यह भी पक्का करता है।

4. अदरक में खून को पतला करने का गुण होता है और इसी वजह से यह ब्लड प्रेशर जैसी बीमारी में तुरंत लाभ के लिए जाना जाता है।

5. दांत में दर्द हो या सिर दर्द में अदरक का जूस बहुत असरकारक है। शोधों के हिसाब से यह माइग्रेन से बचने में भी आपकी भरपूर मदद करता है।

6. अदरक के जूस के नियमित इस्तेमाल से कोलेस्ट्रॉल हमेशा कम बना रहता है। यह खून के थक्कों को जमने नहीं देता। है और इस तरह ये दिल की बीमारियों की आशंका से आपको बचाए रखता है।

7. अदरक का यह चमत्कारी गुण आपको न केवल पाचन और गैस बल्कि, सभी तरह के पेट दर्द से भी निजात दिलाता है।

8. यदि आप घने और चमकदार बाल चाहते हैं तो अदरक जूस का नियमित उपयोग आपकी यह इच्छा पूरी कर सकता है। इसे आप पी भी सकते हैं और सीधे सिर की त्वचा पर भी लगा सकते हैं। आपको सिर्फ यह ध्यान रखना है कि आप शुद्ध जूस सिर पर लगाएं जिसमें पानी की मात्रा बिलकुल न हो या न के बराबर हो। यह न केवल आपके बाल स्वस्थ बना देगा, बल्कि यह आपको रूसी से भी छुटकारा दिला देगा।

9. त्वचा से जुड़ी हुई किसी भी किस्म की समस्या है तो आप अदरक के जूस को नियमित तौर पर इस्तेमाल करना शुरू कर दीजिए। अदरक के जूस से आप मुहांसों से हमेशा के लिए निजात पा सकते हैं।

10. अदरक में कैंसर जैसी भयानक बीमारी से शरीर को बचाए रखने का गुण होता है। यह कैंसर पैदा करने वाले सेल्स को खत्म करता है। एक शोध के अनुसार अदरक स्तन कैंसर पैदा करने वाले सेल्स को बढ़ने से रोकता है।

11. अदरक के जूस में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ाते हैं, क्योंकि इनमें खून को साफ करने का खास गुण होता है।

12. अदरक वाली चाय की छोटी चुस्कियां जी मिचलाहट को रोकने में मदद कर सकती है।

# शनि प्रदोष व्रत : साल 2025 का पहला प्रदोष व्रत पौष माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि को रखा जाएगा

साल 2025 का पहला प्रदोष व्रत पौष माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि को रखा जाएगा। यह विशेष व्रत शनिवार को पड़ने की वजह से ये शनि प्रदोष व्रत कहलाता है। मान्यता है कि इस व्रत को श्रद्धा और विधि पूर्वक करने से भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त होता है और हमारे जीवन की समस्याएं दूर होती हैं। इस व्रत को करने से संतान सुख की प्राप्ति होती है। जो लोग संतान प्राप्ति की इच्छा रखते हैं, उन्हें यह व्रत अवश्य करना चाहिए। इस बार शनि प्रदोष व्रत पर चार शुभ योग का निर्माण हो रहा है, जो इस दिन को और भी विशेष बना रहा है। इसके अलावा शिव आराधना के लिए भक्तों को ढाई घंटे से अधिक का शुभ समय प्राप्त होगा।

शनि प्रदोष व्रत की तिथि दृक पंचांग के अनुसार, पौष शुक्ल त्रयोदशी तिथि का प्रारंभ 11 जनवरी 2025, शनिवार, सुबह 8:21 बजे से होगा और 12 जनवरी, सुबह 6:33 बजे इसका समापन होगा। व्रत और पूजा का विधान तिथि के प्रारंभिक समय के अनुसार 11 जनवरी को किया जाएगा।

शनि प्रदोष व्रत का मुहूर्त शिव पूजा का शुभ समय- शाम 5:43 बजे से रात 8:26 बजे तक।

कुल समय- 2 घंटे 42 मिनट।

ब्रह्म मुहूर्त- सुबह 5:27 बजे से 6:21 बजे तक।

अभिजीत मुहूर्त- दोपहर 12:08 बजे से 12:50 बजे तक।

इन मुहूर्तों में शिव पूजा करना अत्यंत शुभ और फलदायी माना जाता है।

शनि प्रदोष व्रत पर रुद्राभिषेक का समय शनि प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव का विशेष रूप से रुद्राभिषेक किया जाता है।

शिववास कैलाश पर: सुबह 8:21 बजे तक।

शिववास नंदी पर: 12 जनवरी, सुबह 6:33 बजे तक।

शिववास भोजन में: इसके बाद शिववास भोजन में रहेगा।

इन विशेष समयों में रुद्राभिषेक करने से भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त होता है और भक्तों की सभी इच्छाएं पूरी होती हैं।

शनि प्रदोष व्रत का महत्व जो लोग भगवान शिव की कृपा पाना चाहते हैं। उन्हें यह व्रत रखने से भोलेनाथ की कृपा प्राप्त होती है। माना जाता है कि ऐसे लोगों का जीवन में चल रहा बुरा समय खत्म होता है। और सुख-शांति व सौभाग्य मिलता है। इस व्रत से इच्छाएं पूरी होती हैं। और समृद्धि मिलती है। मान्यता है कि शनि प्रदोष व्रत करने से शनि देव की कृपा मिलती है।

सर्वार्थ सिद्धि योग में शनि प्रदोष व्रत इस बार का शनि प्रदोष व्रत सर्वार्थ सिद्धि योग में किया जाएगा। हिंदू धर्म के अनुसार, जो व्रत सर्वार्थ सिद्धि योग में किया जाता है। उसका फल कई गुना अधिक प्राप्त होता है। इसलिए इस दिन शिवलिंग का जलाभिषेक करने का महत्व बढ़ जाता है। शनि देव की पूजा का भी विशेष फल प्राप्त होगा।

कैसे करें शनि प्रदोष व्रत पर पूजा हिंदू धर्म में विधान है कि प्रदोष व्रत रखते हैं तो उस दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठ जाना चाहिए। स्नान करना चाहिए। साफ वस्त्र धारण करने चाहिए। इसके बाद भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा करनी चाहिए। इसके बाद मंदिर जाकर शिवलिंग पर सफेद चंदन, फूल, बेलपत्र आदि अर्पित करें। शिवलिंग का जलाभिषेक करें। पूरे दिन व्रती रहें। शाम को प्रदोष काल के समय पूजा का विधान है। प्रदोष काल में घी का दीपक जलाएं। शिव चालीसा का पाठ करें। भोलेनाथ के मंत्रों का जप करें। मां पार्वती की पूजा करें। पूजा के बाद आरती करें। और भगवान शिव और माता पार्वती को भोग लगाएं। इस दिन जरूरतमंदों को यथाशक्ति दान देना शुभ माना जाता है।

शनि प्रदोष व्रत पर करें ये उपाय शनि प्रदोष व्रत के दिन गंगाजल दूध और शहद से शिवलिंग का अभिषेक करना चाहिए। भगवान शिव को बेलपत्र और धतूरा बहुत प्रिय है। इसलिए इस दिन भगवान शिव को बेलपत्र और धतूरा अर्पित करना चाहिए। ऐसा करने से शनि दोष से शांति मिलती है।

इस शिवलिंग पर केसर चढ़ाने की मान्यता भी है। ऐसा करने से घर की दरिद्रता दूर हो जाती है।

इस दिन शिव जी को गंगाजल और चावल अर्पित करने से व्यक्ति कर्ज मुक्त हो जाता है। साथ ही उसे धन का लाभ भी होता है।

शनि प्रदोष व्रत के दिन भक्ति भाव से भगवान शिव का पूजन करना चाहिए। ऐसा करने से कारोबार में बढ़ोत्तरी होती है।

इस दिन शनि देव को प्रसन्न करने के लिए काले तिल और तेल का दान करना चाहिए। ऐसा करने से दुर्भाग्य सौभाग्य में बदल जाता है।

इस दिन गरीबों और जरूरतमंदों को भी दान करना चाहिए। ऐसा करने से जीवन में सुख शांति आती है।

शनि देव को नीला रंग अत्यंत प्रिय है। इसलिए इस दिन नीले रंग के कपड़े पहनने चाहिए। साथ ही नीले रंग के फूल भी शनि देव को चढ़ाने चाहिए।

# दिल्ली चुनाव के लिए आनेवाली है बीजेपी की दूसरी लिस्ट , सीईसी की बैठक में बाकी 41 प्रत्याशियों पर हुई चर्चा

दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए बीजेपी की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में पीएम मोदी अमित शाह और जेपी नड्डा समेत कई बड़े नेता मौजूद रहे। बैठक में पार्टी उम्मीदवारों की दूसरी सूची को अंतिम रूप दिया गया। इससे पहले भाजपा ने 29 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की थी। दिल्ली में 5 फरवरी को मतदान होगा और 8 फरवरी को वोटों की गिनती होगी।

**नई दिल्ली।** भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की केंद्रीय चुनाव समिति की शुक्रवार को हुई बैठक खत्म हो गई। इसमें दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए बाकी 41 उम्मीदवारों के नामों पर मंथन किया गया। इसके साथ ही जल्द ही दूसरी सूची आने की संभावना बढ़ गई। इस बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह भी शामिल हुए हैं।

70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा के चुनाव के लिए भाजपा की 29 उम्मीदवारों की पहली सूची 4 जनवरी को सामने आई थी। इसमें पूर्व मुख्यमंत्री और AAP सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल के खिलाफ नई दिल्ली सीट से पूर्व सांसद प्रवेश वर्मा को मैदान में उतारा गया है।

**अमित शाह और जेपी नड्डा बैठक में मौजूद**

पार्टी ने एक अन्य पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी को कालकाजी से उम्मीदवार बनाया है, जहां मुख्यमंत्री और आप उम्मीदवार आतिशी मैदान में हैं। मोदी के अलावा, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा उम्मीदवारों के नामों को अंतिम रूप देने में सीईसी के अन्य सदस्यों के साथ शामिल हुए हैं। शाह और नड्डा ने संभावित उम्मीदवारों की सूची और पार्टी की रणनीति पर विचार-विमर्श करने के लिए दिन में दिल्ली भाजपा नेताओं के साथ मुलाकात की।

**दिल्ली में 5 फरवरी को है मतदान**

राजधानी दिल्ली में आम आदमी पार्टी के 10 साल पुराने शासन को खत्म करने के लिए भाजपा हर संभव प्रयास कर रही है। AAP ने 2015 और 2020 में लगातार दो विधानसभा चुनावों में बहुमत हासिल की थी। बीजेपी का प्रदर्शन लोकसभा चुनाव में बेहतरीन रहा है। बीते साल हुए लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने दिल्ली की सभी सात सीटों पर जीत हासिल की थी। दिल्ली में मतदान 5 फरवरी को होगा और वोटों की गिनती 8 फरवरी को होगी।

| क्रमांक | सीट | उम्मीदवार |
|---|---|---|
| 1. | आदर्श नगर | राजकुमार भाटिया |
| 2. | बादली | दीपक चौधरी |
| 3. | रिठाला | कुलवंत राणा |
| 4. | नांगलोई जाट | मनोज शौकीन |
| 5. | मंगोलपुरी (अजा) | राजकुमार चौहान |
| 6. | रोहिणी | विजेंद्र गुप्ता |
| 7. | शालीमार बाग | रेखा गुप्ता |
| 8. | मॉडल टाउन | अशोक गोयल |
| 9. | करोलबाग (अजा) | दुष्यंत गौतम |
| 10. | पटेल नगर (अजा) | राजकुमार आनंद |
| 11. | राजौरी गार्डन | मनजिंदर सिंह सिरसा |
| 12. | जनकपुरी | आशीष सूद |
| 13. | बिजवासन | कैलाश गहलोत |
| 14. | नई दिल्ली | प्रवेश वर्मा |
| 15. | जंगपुरा | तरविंदर सिंह मारवाह |
| 16. | मालवीय नगर | सतीश उपाध्याय |
| 17. | आरके पुरम < | अनिल शर्मा |
| 18. | महरौली | गजेंद्र यादव |
| 19. | छतरपुर | करतार सिंह तंवर |
| 20. | अंबेडकर नगर (अजा) | खुशी राम चुनार |
| 21. | कालकाजी | रमेश बिधूड़ी |
| 22. | बदरपुर | नारायण दत्त शर्मा |
| 23. | पटपड़गंज | रविंद्र सिंह नेगी |
| 24. | विश्वासनगर | ओम प्रकाश शर्मा |
| 25. | कृष्णा नगर | डॉ. अनिल गोयल |
| 26 | गांधीनगर | अरविंदर सिंह लवली |
| 27. | सीमापुरी (अजा) | कुमारी रिंकु |
| 28. | रोहतास नगर | जितेंद्र महाजन |
| 29. | घोंडा | अजय महावर |

# आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली की जनता के साथ गठजोड़ किया हुआ है, यही गठजोड़ हमें चुनाव जिताएगा : सीएम

सुषमा रानी

**नई दिल्ली,** दिल्ली की मुख्यमंत्री और कालकाजी विधानसभा सीट से आम आदमी पार्टी की प्रत्याशी आतिशी ने गुरुवार को गोविंदपुरी में अपने चुनाव कार्यालय का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने वहां की जनता से मुलाकात कर उनसे जीत का आशीर्वाद लिया। सीएम आतिशी ने भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि गाली-गलौज पार्टी के पास दिल्ली में न तो कोई सीएम फेस है, न कोई एजेंडा है और ना ही दिल्लीवालों के लिए कोई प्लान है। दिल्ली की जनता देख रही है कि आम आदमी पार्टी ने पिछले 10 साल में काम करके कैसे उनकी जिंदगी सुधारी है, जबकि भाजपा ने गाली गलौज के अलावा कुछ काम नहीं किया। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली की जनता के साथ गठजोड़ किया हुआ है और यही गठजोड़ हमें चुनाव जिताएगा।

दिल्ली की मुख्यमंत्री और कालकाजी विधानसभा सीट से आम आदमी पार्टी की उम्मीदवार आतिशी ने कहा कि कालकाजी विधानसभा में पिछले पांच साल से मुझे लोगों का खूब आशीर्वाद मिला है। आज यहां आधिकारिक रूप से चुनावी कैंपेन की शुरुआत हो रही है। क्योंकि कालकाजी विधानसभा कालका माई के नाम से जानी जाती है। कालका माई का आशीर्वाद आम आदमी पार्टी, अरविंद केजरीवाल, मुझ पर और कालकाजी के लोगों पर बना रहेगा।

सीएम आतिशी ने कहा कि इस गाली-गलौज पार्टी के पास चुनाव में कोई चेहरा नहीं है, सीएम फेस नहीं है। इनके पास कोई एजेंडा, नैरेटिव या दिल्लीवालों के लिए प्लान नहीं है। दिल्ली के लिए कोई सपना नहीं है। इनके पास केवल एक काम है अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी के नेताओं को गाली देना। दिल्ली वाले साफ देख रहे हैं कि एक तरफ एक पार्टी है जिसने 10 साल दिल्ली वालों के लिए काम किया है और उनकी जिंदगी सुधारी है। एक पार्टी है जो अगले 5 साल के लिए विजन लेकर आ रही है। वहीं दूसरी ओर एक गाली गलौज करने वाली पार्टी है जिसके पास गाली गलौज करने के अलावा और कोई भी काम नहीं है। इसलिए मुझे लगता है कि दिल्ली की जनता के लिए अपना निर्णय लेना बहुत आसान है।

सीएम आतिशी ने कहा कि आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली के लोगों के साथ गठजोड़ किया हुआ है और वही गठजोड़ आम आदमी पार्टी, अरविंद केजरीवाल और हम सबको चुनाव जिताएगा। क्योंकि दिल्ली वाले अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी से जिस प्यार के बंधन से बंधे हुए हैं वह असली गठजोड़ है जिसकी वजह से हमें बार-बार दिल्ली वालों का इतना प्यार मिलता रहा है।

# सफदरजंग अस्पताल में स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर एक प्रसिद्ध संस्थान है

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

**नई दिल्लीः** सफदरजंग अस्पताल में स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर (SIC) एक प्रसिद्ध संस्थान है जो खेल और जोड़ों के विकारों के लिए व्यापक शल्य चिकित्सा, पुनर्वास और नैदानिक सेवाएँ प्रदान करने के लिए समर्पित है। एक अग्रणी तृतीयक देखभाल अस्पताल के रूप में, हम असाधारण रोगी देखभाल प्रदान करने, नवीन अनुसंधान को आगे बढ़ाने और फिटनेस और कल्याण की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अत्याधुनिक तकनीक और बहु-विषयक विशेषज्ञता का लाभ उठाते हैं।अस्पताल में स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर की स्थापना वास्तव में 2008 में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा खेल चोटों और जोड़ों के विकारों में विशेष देखभाल की बढ़ती जरूरत को पूरा करने के लिए की गई थी। यह आधुनिक सुविधा राष्ट्रमंडल खेलों से ठीक पहले स्थापित की गई थी।8 जनवरी, को सफदरजंग अस्पताल में स्पोर्ट्स इंजरी सेंटर (SIC) को विस्तारित क्षमता के साथ उन्नत, आयातित और अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित एक नई सुविधा में स्थानांतरित कर दिया गया।यह अत्याधुनिक तकनीक से लैस है, जिसमें आयातित व्यायाम मशीनें, टेक्नो जिम, अंडरवाटर ट्रेडमिल, हाइड्रोथेरेपी पूल और उन्नत संतुलन प्रणाली शामिल हैं। इसके अलावा, वैक्यूम स्पोर्ट्स मशीन, व्यक्तिगत बायोफीडबैक सुदृढ़ीकरण प्रणाली और आगामी बायोमैकेनिक और मोशन एक्शन लैब्स के साथ। 8 जनवरी, 2025 को, नए एसआईसी ने डॉ कपिल सूरी, चिकित्सा अधीक्षक, एसजेएच और डॉ दीपक जोशी, निदेशक, एसआईसी की देखरेख में एक साल का माइलस्टोन पूरा कर लिया है।

# केजरीवाल गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं : सांसद भोला सिंह

सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** भारतीय जनता पार्टी बुलंदशहर के सांसद भोला सिंह ने आज दिल्ली के राजेंद्र नगर विधानसभा में एक जनसभा में केजरीवाल को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि वह अपने बच्चों की झूठी कसमें खाते हैं मात्र राजनीति के चलते उन्होंने अपने बच्चों की कसम खाई थी की कभी भी वह सरकारी गाड़ी सरकारी बंगला सरकारी सिक्योरिटी पुलिस नहीं लेंगे क्योंकि वह एक आम आदमी है और उनकी पार्टी आम आदमी है उन्हें किसी से कोई खतरा नहीं।

सांसद भोला सिंह ने कहा कि केजरीवाल के झूठे वादे झूठी कसमें कहां गई आज उनके पास उन्होंने सरकारी बंगला भी लिया सरकारी सुख सुविधा भी ली सरकारी शीश महल भी बनाया और सरकारी पुलिसकर्मी आदि सुख सुविधा भी लेकर घूम रहे हैं मेरा मानना है कि केजरीवाल जैसा की गिरगिट होता है इस प्रकार वह इस राजनीति में पड़कर गिरगिट की तरह रंग बदल रहे हैं और जनता से झूठे वादे कर रहे हैं दिल्ली की जनता को आज तक उन्होंने फ्री बिजली का वादा किया था वह नहीं मिल रही है फ्री पानी देने का वादा किया था वह गटर का मिल रहा है पीने का पानी दिल्ली की जनता को नहीं मिल रहा है दिल्ली की जनता पीने का पानी खरीदना पड़ रहा है और जो इनके मोहल्ला क्लीनिक है वह नशेखोरियों नशेडियों का अड्डा बना हुआ है उसमें डॉक्टर नहीं है कोई बेहतरीन चिकित्सा सुविधा नहीं है सिर्फ नाम के मोहल्ला क्लीनिक रह गए हैं जगह-जगह मोहल्ला क्लीनिक खाली पड़े हैं उनमें गली के कुत्ते सोते रहते हैं अगर केजरीवाल सरकार ने दिल्ली की जनता को कुछ दिया है तो फ्री की शराब दी है और शराब को पीकर दिल्ली की जनता ने शराबी बन गई है उनके घर में चूल्हा तक नहीं चल रहा है*

*उनकी सरकार अब जाने वाली है जनता समझ चुकी है जनता को पूरी तरह केजरीवाल सरकार ने ठगा है झूठे वादे किए हैं और बार-बार गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले केजरीवाल अब दिल्ली से विदा होने वाले हैं*

*सांसद भोला सिंह ने कहा कि दिल्ली के अनुसूचित जाति वर्ग के लोगों को आज तक कोई भी लाभ केजरीवाल सरकार ने नहीं दिया है इस समाज के किसी भी बच्चों को उन्होंने नौकरियों पर नहीं लगाया है ना ही सफाई कर्मचारियों की नौकरियों की भर्ती पूरे 10 साल में इन्होंने निकाली है और कहते हैं झाड़ू का निशान है और झाड़ू सफाई करने के काम आती है दलित समाज की यह रोजी-रोटी का जरिया है आज तमाम अनुसूचित जाति वर्ग इसी झाड़ू से केजरीवाल सरकार का सफाया करने जा रहा है और भाजपा का कमाल अब तमाम दलित समाज मिलकर के खिलाने जा रहा है*

इस मौके पर मीडिया सह प्रमुख कार्यक्रम जिला करोल बाग के जिला मीनाक्षी सूद के सौजन्य से किया गया* *हरीश गिल संजू संगत किशोर कुमार मीना कुमार सरोज वोहित* *राम कुमार वर्मा प्रवासी प्रभारी* *सोमनाथ वाल्मीकि शैलेंद्र सिंह अंजू जाटव रीना रानी एवम बूथ प्रबंधन संयोजक करोल बाग शादीपुर पटेल नगर मण्डल जिला करोल बाग दिल्ली प्रदेश अनुसूचित जाति मोर्चा की तमाम टीम आदि ने बढ़-चढ़कर के हिस्सा लिया।

# बृजवासी जब ब्रजवादी बनेगा तभी ब्रज की संस्कृति को बचाया जा सकेगा - राजकुमार चाहर

**नई दिल्ली।** विश्वकर्मा भवन दिल्ली में *ब्रजवासी परिवार* की बैठक हुई जिसमें अखिल भारतीय संरक्षक व लोकसभा सांसद राजकुमार चाहर ने कहा जनता ने मुझे 2019 में लोकसभा भेजा तो मैने लोकसभा में गिर्राज महाराज की जय बोली, हम सभी को ब्रजभाषा में बात करनी चाहिए, अपने खान पान की ओर लौटे, अपने इतिहास को जाने, महापुरुषों को जाने, संगठन की विस्तृत जानकारी व संचालन संगठन महामंत्री डॉ दीपेंद्र चाहर ने किया, कार्यक्रम की अध्यक्षता हुकम सिंह, धन्यवाद महामंत्री एडवोकेट नीरज चौधरी किया, कार्यक्रम में रविदीप चाहर, भीकम सिंह, राजबीर सोलंकी, विनोद सिनसिनवार, मुकेश सिंह निर्भय गुप्ता, मुरली मोहन शर्मा सहित ब्रज क्षेत्र 16 जिलों के 65 प्रमुख वकील, सीए, सीएस, उद्योग पति, सरकारी अधिकारी, समाजसेवी ब्रजवासी उपस्थित रहे।"

## त्रिकोणीय मुकाबले में इस बार कांग्रेस मजबूत, राहुल गांधी और खरगे समेत ये 30 नेता संभाल रहे दिल्ली की कमान

दिल्ली विधानसभा चुनाव में इस बार कांग्रेस पूरी मजबूती से मैदान में है। पार्टी ने सभी प्रमुख सीटों पर दिग्गजों को उतारा है। कांग्रेस ने आम आदमी पार्टी की घोषणाओं के मुकाबले कई बड़ी गारंटी दी हैं। पार्टी ने दिल्ली के सभी 70 विधान सभा क्षेत्रों में न्याय यात्रा निकालकर भी अपने पक्ष में माहौल बनाया है।

**नई दिल्ली।** पिछले दो विधानसभा चुनावों में भले कांग्रेस अपना खाता भी नहीं खोल पाई हो, लेकिन इस बार पार्टी पूरी एकजुटता और मजबूती से चुनाव मैदान में है। किसी भी स्तर पर पार्टी कमजोर नहीं लग रही। ना उम्मीदवारों के मामले में और ना ही प्रचार को लेकर। सबसे बड़ी बात यह कि इस बार मतदाताओं में भी कांग्रेस को लेकर पहले के बनिस्पत कहीं अधिक भरोसा देखने को मिल रहा है।अगर यह कहा जाए कि अबकी बार विधानसभा चुनाव में वाकई त्रिकोणीय मुकाबला होगा तो बिल्कुल गलत नहीं होगा। ऐसे में देखना दिलचस्प होगा कि चुनाव परिणाम क्या रहता है, किन्तु इतना तो लग ही रहा है कि किसी भी दल के लिए इस बार सरकार बना पाता इतना सरल नहीं होगा।

# फेस्टा ने पुलिस अधिकारियों को सदर बाजार की समस्याओं से अवगत कराया

सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेडर्स एसोसिएशन की ओर से फेडरेशन के कार्यालय में एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सदर बाजार नियुक्त एसीपी सब डिवीजन सदर बाजार करण सिंह राणा व एस एच ओ सहदेव सिंह तोमर सहित क्षेत्र के विभिन्न पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।

चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा व अध्यक्ष राकेश यादव पुलिस अधिकारियों को सदर बाजार की समस्या से अवगत कराया जिसमें उन्होंने बताया सदर बाजार में अतिक्रमण की बहुत ज्यादा दिक्कत है उसके साथ-साथ सदर बाजार थाने से लेकर 12 टूटी चौक तक जो पार्किंग है वह उसे पर दो-दो तीन-तीन लाइन पार्क करते है जिसके कारण ट्रैफिक जाम रहता है, और आए दिन इसे आपराधिक घटनाएं होती रहती है। इसके साथ-साथ सदर बाजार में दलालों का भी बहुत ज्यादा अंतक है खरीदार दलालों के शिकार बन जाते हैं जिसमें उनका काफी धोखा होता है।

इस अवसर पर पम्मा व राकेश यादव पुलिस पेट्रोलिंग बढ़ाने के साथ-साथ महिला पुलिसकर्मी भी मार्केट में तैनात किए जाएं क्योंकि कई महिलाएं जेब कतरी महिलाओं को टारगेट करती है।

इस अवसर पर राजेंद्र शर्मा, सतपाल सिंह मांगा, कमल कुमार ने बताया फेस्टा पुलिस अधिकारियों के साथ मिलकर सदर बाजार की विभिन्न मार्केट में सर्वेंट वेरीफिकेशन अभियान चलाएगी। जिससे इस बात की जांच हो सके कोई बांग्लादेशी या अपराधी अपनी पहचान छुपा कर यहां करें तो नहीं कर रहा।

इस अवसर पर एसीपी सदर बाजार व एस एच ओ सारी समस्या सुनने के बाद व्यापारियों को आश्वासन दिया के वह जल्द ही इन समस्याओं का निर्धारण करेंगे और हर महीने व्यापारियों के साथ एक बैठक किया करेंगे।

इस अवसर पर एसीपी सदर बाजार व एस एच ओ को फेस्टा की ओर से प्रतीक चिन्ह भी भेंट किया गया। साथ ही सभी अधिकारियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा, अध्यक्ष राकेश यादव, कार्यवाहक अध्यक्ष चौधरी योगेंद्र सिंह, महासचिव राजिन्दर शर्मा, सतपाल सिंह मांगा, कमल कुमार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजीव छाबड़ा, सुरेंदर महेंद्रु, राजकुमार गुप्ता, व्यापारी नेता कन्हैया लाल राघवानी, कमल गुप्ता, भारत भूषण गोगिया, नरेंद्र गुप्ता, वरिंदर सिंह, जसविंदर सिंह, गोपाल ग्रोवर, हिमांशु, रमेश सचदेवा, वरिंदर आर्य, कुलदीप सिंह, अभय, तरुण सोनी, सहित अनेक व्यापारी उपस्थित थे।

# गायब होती बेटियाँ: आख़िर किसकी बन रहीं शिकार

हरियाणा के हिसार में लापता बेटी की खोज में परेशान एक पिता ने मुख्यमंत्री नायब सैनी से मिलने का प्रयास किया। इस दौरान पुलिस ने सीएम के पास जाने से रोका तो दंपती ने आत्मदाह करने का प्रयास किया। घटना उस समय हुई जब मुख्यमंत्री का काफ़िला हिसार दौरे पर था। पिता ने ख़ुद पर पेट्रोल डालकर आत्महत्या करने की कोशिश की। लेकिन मौके पर मौजूद सुरक्षा कर्मियों ने उसे समय रहते रोक लिया। गीता कॉलोनी निवासी के अनुसार 29 सितंबर से उसकी 16 साल की बेटी लापता है। थाने में शिकायत देकर गुमशुदगी दर्ज करवा चुके हैं। उसने बताया कि वह गाड़ी चलाता है, बेटी नौवीं कक्षा तक पढ़ी है। बताया कि 29 सितंबर की सुबह 6 बजकर 10 मिनट पर वह घर से निकली थी। लेकिन लगभग चार माह बाद भी बेटी नहीं मिली। आख़िर कहाँ गायब हो जाती है देश की बेटियाँ? क्यों नहीं ढूँढ पाती बेटियों को हमारी पुलिस? इसने महिलाओं की सुरक्षा को लेकर सवाल खड़े कर दिए हैं। सरकार के तमाम दावों के बावजूद भारत में महिलाओं के खिलाफ अपराध रुक नहीं रहे हैं। इसका एक मुख्य कारण इस मुद्दे को लेकर सभी राजनीतिक दलों में रुचि की कमी है।

**डॉ सत्यवान सौरभ**

भारत में बेटियों की सुरक्षा हमेशा से ही सबसे गंभीर मुद्दा रहा है। इसे लेकर कई कानून भी बनाए गए हैं, लेकिन बावजूद इसके देश में लड़कियों के लापता होने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार के अनुसार भारत में पिछले दो साल के बीच 15.13 लाख से ज़्यादा लड़कियाँ और महिलाएँ लापता हुई हैं। अब ये महिलाएँ कहाँ गई, इनके साथ क्या हुआ, इसके बारे में किसी को कुछ भी नहीं पता है। इन लापता लड़कियों में 18 साल से कम और उससे ज़्यादा दोनों उम्र की महिलाएँ शामिल है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर रोज़ 345 लड़कियाँ गायब हो जाती हैं। इनमें 170 लड़कियाँ किडनैप होती हैं, 172 लड़कियाँ लापता होती हैं और लगभग 3 लड़कियों की तस्करी कर दी जाती हैं। इनमें से कुछ लड़कियाँ तो मिल जाती हैं, लेकिन बड़ी संख्या में लापता, किडनैप और तस्करी की गई लड़कियों का कुछ पता नहीं चलता। इस संख्या की गणना गुमशुदा महिलाओं और लड़कियों के सम्बंध में पुलिस स्टेशनों में दर्ज रिपोर्टों के आधार पर की है।

हालांकि सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि असल संख्या अधिक हो सकती है क्योंकि कई परिवार सामाजिक कलंक समेत विभिन्न कारणों से लापता लड़कियों की रिपोर्ट दर्ज नहीं कराते हैं। आंकड़ों के अनुसार सबसे ज़्यादा महिलाएँ मध्य प्रदेश से लापता हुई हैं। एमपी के बाद लिस्ट में दूसरा स्थान बंगाल का है। इन राज्यों के अलावा राजधानी दिल्ली में भी लड़कियों और महिलाओं के गायब होने के कई मामले सामने आए हैं। आंकड़ों की मानें तो केंद्र शासित प्रदेशों में राजधानी दिल्ली इस लिस्ट में सबसे ऊपर है। रिपोर्ट चौंकाने वाली है। जो लड़कियाँ गायब होती हैं, उनमें से अधिकतर का पता नहीं चल पाता कि उनके साथ क्या हुआ है? वे कहाँ गई हैं? लापता होने के पीछे राज क्या हैं? 16 दिसम्बर 2012 को दिल्ली के निर्भया कांड ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था। इस घटना के बाद महिलाओं की

सुरक्षा से जुड़े कई कठोर कानून बनाए गए, लेकिन सवाल ये है कि क्या कानूनों के बनाए जाने के बाद भी देश में महिलाओं की स्थितियाँ सुधरी हैं या महिलाओं के साथ हो रहे अपराधों में कोई कमी नज़र आई है भारत में महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा को लेकर कई कानून बनाए गए हैं।

देश में हो रहे यौन अपराध को रोकने के लिए पुराने कानूनों में संशोधन भी किया गया और उसे कठोर भी बनाया गया है। इसके अलावा देश में 12 साल से कम उम्र की लड़कियों के साथ रेप की घटना में दोषी को मृत्युदंड सहित कई कठोर दंडात्मक प्रावधान भी तय किए गए हैं। देश भर में महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई पहल की हैं, जिसमें यौन अपराधों के खिलाफ प्रभावी रोकथाम के लिए आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 2013 शामिल है। इसके अलावा, आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 2018 को 12 साल से कम उम्र की लड़कियों के बलात्कार के लिए मौत की सजा सहित और भी अधिक कठोर दंड प्रावधानों को-को निर्धारित करने के लिए अधिनियमित किया गया था। अधिनियम में बलात्कार के मामलों में दो महीने में जांच पूरी करने और आरोप पत्र दाखिल करने और अगले दो महीने में सुनवाई पूरी करने का भी आदेश दिया गया है। सरकार ने आपातकालीन प्रतिक्रिया सहायता प्रणाली शुरू की है, जो सभी आपात स्थितियों के लिए एक अखिल भारतीय, एकल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त नंबर (112) आधारित प्रणाली प्रदान करती है, जिसमें संकटग्रस्त स्थान पर फील्ड संसाधनों को कंप्यूटर सहायता से भेजा जाता है।

स्मार्ट पुलिसिंग और सुरक्षा प्रबंधन में सहायता के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए, पहले चरण में आठ शहरों-अहमदाबाद, बेंगलुरु, चेन्नई, दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता, लखनऊ और मुंबई में सुरक्षित शहर परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। फिर भी भारत में महिलाएँ आज से 10 साल पहले भी यौन अपराधियों का शिकार बनती रही है और आज भी हालात कुछ बहुत ऐसे ही हैं। देश में छेड़छाड़, अपहरण और दुष्कर्म जैसे मामले रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं। सरकार के तमाम दावों के बावजूद भारत में महिलाओं के खिलाफ अपराध रुक नहीं रहे हैं। इसका एक मुख्य कारण इस मुद्दे को लेकर सभी राजनीतिक दलों में रुचि की कमी है। देश में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर हर महिलाओं और लड़कियों को कुछ कानूनों के बारे में जानना बेहद ज़रूरी है। इन कानूनों में राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम, महिला सुरक्षा कानून, पॉक्सो एक्ट कानून शामिल है।

# नोएडा में लग्जरी गाड़ियों का क्रेज, डिमांड में पांच गुना उछाल; ऐसे खरीदें विदेशी कार

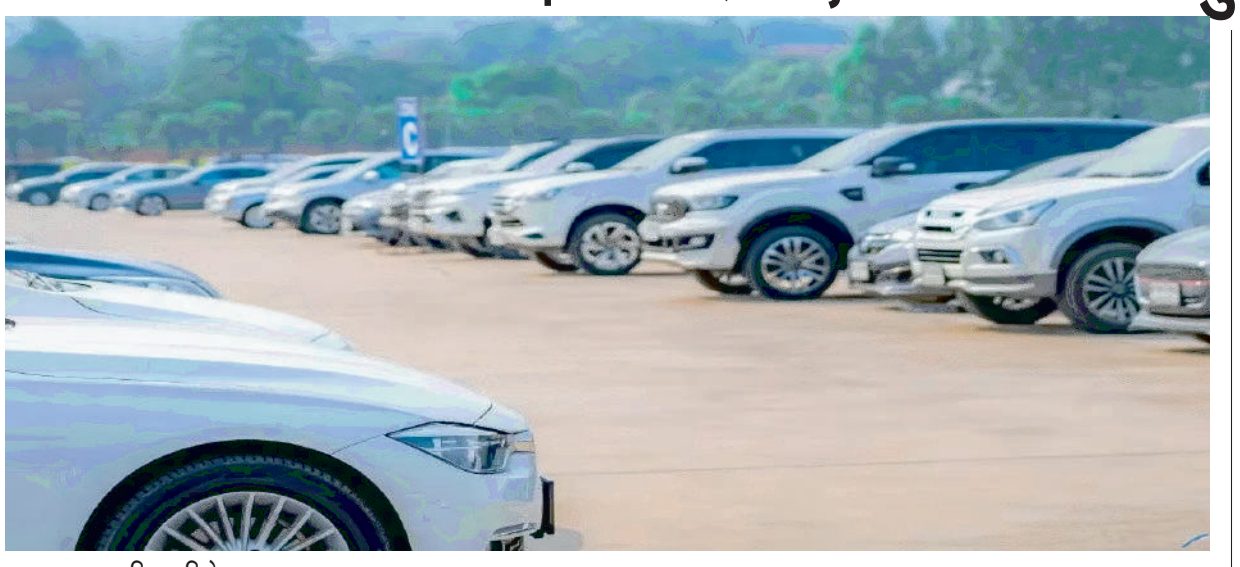

**परिवहन विशेष न्यूज**

नोएडा में लग्जरी कारों और बाइक्स की डिमांड में जबरदस्त उछाल आया है। खासकर युवाओं में इन गाड़ियों का क्रेज बढ़ा है। विदेशी लग्जरी कार और देशी लग्जरी कार की डिमांड पांच गुना बढ़ गई है। एक करोड़ से लेकर चार करोड़ रुपये तक की कारें खरीदी जा रही हैं। हर महीने यह आंकड़ा बढ़ता जा रहा है। इसमें तीन लाख से अधिक कारें हैं।

**नोएडा।** जिले के लोग महंगी कार और बाइक के शौकीन होने लगे हैं। इसमें खासकर युवाओं की अधिक दिलचस्पी है। विदेशी लग्जरी कार व देशी लग्जरी कार की डिमांड पांच गुना बढ़ गई है। जिसमें एक करोड़ से लेकर चार करोड़ रुपये तक की कारें खरीदी गई। यहीं आंकड़ा हर महीने बढ़ता जा रहा है।

खास बात ये है कि हर महीने यह आंकड़ा बढ़ता जा रहा है। शहर में कुल 1080650 रजिस्टर्ड वाहन रोड पर दौड़ रहे हैं। इसमें तीन लाख से अधिक कारें हैं। जिसमें 2020 तक विदेशी लग्जरी कार और बाइक की संख्या सिर्फ 333 थी। इसमें 152 बाइक व 181 कारें थीं।

इनमें बाइक की कीमत 10 लाख रुपये से लेकर 18 लाख रुपये तक है। कारों का यहीं आंकड़ा पांच साल में बढ़कर 683 हो गया है व विदेशी कार और बाइक कुल अब 1016 हो गई हैं। वहीं इंडियन कार 330039 हैं। एक करोड़ रुपये से अधिक कीमत की से लेकर 4 करोड़ तक की गाड़ी जो शहर के ऑन रोड पर चल रही हैं।

उनमें सबसे ज्यादा रॉल्स रॉयस, वाल्वो, बीएमडब्ल्यू पोर्श, मर्सिडीज बेंज जी वैगन जैसी कार शामिल हैं। सबसे ज्यादा क्रेज लोगों में मर्सिडीज खरीदने का है। अधिक टैक्स लगने के बावजूद इन गाड़ियों का क्रेज बढ़ रहा है।

**कैसे खरीदें विदेशी कार**

भारत में विदेशी कार आयात करने के लिए, जरूरी दस्तावेजों की व्यवस्था करनी होती है।

**इनमें वाहन की बीमा पॉलिसी**
इनवाइस
बैंक ड्राफ्ट
गैट घोषणा
बिल ऑफ लैडिंग
इम्पोर्ट लाइसेंस
टेस्ट रिपोर्ट

शुल्क छूट पात्रता प्रमाणपत्र (डीईईसी) साथ में शुल्क पात्रता पास बुक (डीईपीबी) शामिल हैं।

इसी के साथ में कार को सीधे एजेंट के जरिए आयात किया जा सकता है। एजेंट कार को भारत में आसानी से पंजीकृत करवा देता है।

**विदेशी कार खरीदने के बाद दो साल बेच नहीं सकते**

अगर आपने विदेशी कार खरीद लिया तो उसे दो साल के पहले किसी को बेच नहीं सकते हैं। ऐसे में जिसे कार बेचेंगे उसके नाम ट्रांसफर नहीं हो सकता है। साथ में दुबई से नई कार आयात करने के लिए, वाहन बिल्कुल नया होना चाहिए।

पांच साल में बढ़े विदेशी कार के खरीदार

797 कार, एक करोड़ रुपये से अधिक कीमत की हैं।

81 कार, दो करोड़ 50 लाख रुपये से अधिक कीमत की हैं।

दो कार चार करोड़ से अधिक किमत की है।

## बकाया राशि जमा कराएं नहीं तो गंवाना पड़ेगा फ्लैट, आम्रपाली की सात परियोजनाओं के 2017 खरीदारों को दिया अल्टीमेटम

**परिवहन विशेष न्यूज**

**नोएडा।** आम्रपाली की सात परियोजनाओं में 2017 खरीदारों ने सत्यापन नहीं कराया है। यह सभी परियाजनाएं नोएडा की हैं। कोर्ट रिसीवर (सीआर) ने हाल में नोटिफिकेशन जारी कर इन सभी को दस्तावेजों के साथ सत्यापन कराने और बकाया राशि जमा करने के लिए समय दिया है। निर्धारित समय तक यह प्रक्रिया पूरी नहीं करने पर खरीदारों का सत्यापन नहीं किया हो सकेगा।

बता दें आम्रपाली की परियोजनाओं को नेशनल बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन कंपनी (एनबीसीसी) कोर्ट रिसीवर की देखरेख में पूरा कर रही है। बीते चार वर्षों से यहां के खरीदारों को सत्यापन कराने बकाया राशि जमा करने और रजिस्ट्री कराने का समय दिया जा रहा है।

**सभी को कोर्ट रिसीवर की ओर से समय देकर डेडलाइन की गई तय**

अभी भी हजारों की संख्या में खरीदारों ने सत्यापन नहीं कराया है। नोएडा की सात परियोजनाओं के 2017 खरीदारों के दस्तावेजों का सत्यापन नहीं हुआ है। इन सभी को कोर्ट रिसीवर की ओर से सत्यापन के लिए अलग-अलग समय देकर डेडलाइन निर्धारित की गई है।

इनमें आम्रपाली सफायर-1, सफायर-2, प्रिंसपली एस्टेट, सिलिकान सिटी-1, प्लेटिनम, टाइटेनियम, जोडिएक और इडन पार्क सोसासायटी शामिल हैं। यहां के 2017 खरीदारों को सत्यापन से संबंधित दस्तावेज संबंधित एओए और आरडब्ल्यूए को जमा करने हैं। संबंधित एओए और आरडब्ल्यूए यह दस्तावेज कोर्ट रिसीवर कार्यालय में पहुंचाने का कार्य करेंगी।

खरीदारों की जो बकाया राशि है वह 15 जनवरी तक कोर्ट रिसीवर की बेवसाइट यूको बैंक पर जाकर जमा कर बैंक चालान और स्टेटमेंट एओए और आरडब्ल्यूए को साझा कर सकते हैं।

| परियोजना | सत्यापन के लिए घर | ए ओ ए |
|---|---|---|
| दस्तावेज जमा करने की तिथि द्वारा कोर्ट रिसीवर कार्यालय | | |
| सफायर-1 | 37 | 10 जनवरी |
| 15 जनवरी | | |
| इडन पार्क-2 | 54 | 10 जनवरी |
| 15 जनवरी | | |
| इडन पार्क | 21 | 10 जनवरी |
| 15 जनवरी | | |
| प्रिंसली एस्टेट | 360 | 20 जनवरी |
| 25 जनवरी | | |
| जोडिएक | 628 | 30 जनवरी |
| 30 जनवरी | | |
| प्लेटिनम | 217 | 15 फरवरी |
| 20 फरवरी | | |
| सिलिकॉन सिटी | 700 | 10 मार्च |
| 15 मार्च | | |

इनकी परियोजनाओं में 10 फीसदी खरीदारों ने नहीं लिया कब्जा

नोएडा शहर के एनबीसीसी नोएडा-ग्रेटर नोएडा में आम्रपाली की 24 परियोजनाओं में 38 हजार फ्लैट पूरे कर रहा है। अब तक 24 हजार फ्लैट पूरे कर एनबीसीसी खरीदारों को दे चुका है। 14 हजार फ्लैट और पूरे किए जा रहे हैं।

इन सभी अलग-अलग परियोजनाओं में करीब चार हजार फ्लैट मालिक ऐसे हैं जो न तो कब्जा लेने आए हैं और न ही रजिस्ट्री करा रहे हैं। कोर्ट रिसीवर की ओर से कई बार फ्लैट मालिकों को सूचना भी दी जा चुकी है।

## हिंदी मेरे उर बसे

आन-बान सब शान है, और हमारा गर्व।
हिंदी से ही पर्व है, हिंदी सौरभ सर्व।।

हिंदी हृदय गान है, मृदु गुणों की खान।
आखर-आखर प्रेम है, शब्द- शब्द है ज्ञान।।

बिंदिया भारत भाल की, हिंदी एक पहचान।
सैर कराती विश्व की, बने किताबी यान।।

प्रीत प्रेम की भूमि है, हिंदी निज अभिमान।
मिला कहाँ किसको कहीं, बिन भाषा सम्मान।।

वन्दन, अभिनन्दन करे, ऐसा हो गुणगान।
ग्रंथन हिंदी का कर लो, तभी मिले सम्मान।।

हिंदी भाषा रस भरी, रखती अलग पहचान।
हिंदी वेद पुराण है, हिंदी हिन्दुस्तान।।

हिंदी की मैं दास हूँ, करूँ मैं इसकी बात।
हिंदी मेरे उर बसे, हिंदी हो जज्बात ।।

निज भाषा का धनी जो, वही सही धनवान।
अपनी भाषा सीख कर, बनता व्यक्ति महान।।

मौसम बदले रंग ज़ब, तब बदले परिवेश।
हो हिंदीमय स्वयं जब, तभी बदलता देश।।

निज भाषा बिन ज्ञान का, होता कब उत्थान।
अपनी भाषा में रचे, सौरभ छंद सुजान।।

एक दिवस में क्यों बंधे, हिन्दी का अभियान।
रचे बसे हर पल रहे, हिन्दी हिन्दुस्तान।।

**-प्रियंका सौरभ**

# 18 वाँ प्रवासी भारतीय सम्मेलन 8-10 जनवरी 2025 का आगाज़-पूरे विश्व में भारतीयता, संस्कृत सामाजिक मूल्यों की सुगंध बिखेरी

हम भारतीय हमारे बड़े बुजुर्गों व भारत की समृद्ध विरासत का प्रतिबिंब है,जिस देश में रहते हैं वहां के समाज से जुड़कर उस देश का विकास करते हैं- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

**गोंदिया** - वैश्विक स्तरपर शिक्षा, संस्कृति, विरासत, सामाजिक विकास के क्षेत्रों में प्रवासी भारतीयों का योगदान सराहनीय रहा है। क्योंकि जिसके पीछे भारतीय शब्द लगा है चाहे वह मूल हो या प्रवासी उसकी प्रतिष्ठा दुनियाँ में वैसे ही बढ़ जाती है क्योंकि, यह ऐसे मानवीय जीव हैं जिनके बौद्धिक कौशलता से भारत का अभूतपूर्व नाता जुड़ा है जो पैतृक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी उनकी रग रग में समाता जाता है यही कारण है कि मूल भारतीय एवं प्रवासी भारतीयों की मांग दुनियाँ में प्राथमिकता से होती है। जिस तरह से 18 वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन में 70 देशों सेक़रीब 3500 से अधिक रजिस्ट्रेशन हुए थे, उससे अंदाज लगाया जा सकता है कि कितने देशों में प्रवासी भारतीयों का बसेरा है। अनेक देशों में तो इतनी अधिक मात्रा में प्रवासी भारतीय हैं जो वहां की औसत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। तथा वहां की दशा और दिशा को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। प्रवासी भारतीयों की अपनी सांस्कृतिक विरासत की अनुषण बनाए रखने के कारण भी साझा पहचान मिली है, जहां-जहां प्रवासी भारतीय बसे हैं वहां-वहां उन्होंने आर्थिक तंत्र को मज़बूती प्रदान की है। उनकी सफलता का श्रेय उनकी परंपरागत सोच, सांस्कृतिक मूल्यों और शैक्षणिक योग्यता को दिया जाता है। चूंकि 18 वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन 8 से 10 ज़नवरी 2025 को उड़ीसा के भुवनेश्वर शहर में हो रहा है। इसलिए आज हम पीआईबी में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, प्रवासी भारतीय पूरे विश्व में भारतीयता, संस्कृत सामाजिक मूल्यों की सुगंध बिखेरी।

साथियों प्रवासी भारतीय दिवस (पीबीडी) सम्मेलन भारत सरकार का प्रमुख कार्यक्रम है,जो प्रवासी भारतीयों से जुड़ने और उन्हें एक-दूसरे के साथ वार्तालाप करने में सक्षम बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। इस प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन का विषय विकसित भारत में प्रवासी भारतीयों का योगदान है। 70 से अधिक विभिन्न देशों से बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीयों ने पीबीडी सम्मेलन में भाग लेने के लिए पंजीकरण कराया था। साथियों बात अगर हम प्रवासी भारतीय दिन में सम्मेलन के प्रभावों व महत्व की करें तो, पीबीडी भारत और भारतीय प्रवासियों के बीच संबंधों का जश्न मनाने और भारत के विकास में प्रवासियों के योगदान को मान्यता देने का दिन है। यह भारत के विकास में प्रवासी भारतीय समुदाय के योगदान को चिह्नित करता है। कनेक्टिविटी बढ़ाना पीबीडी प्रवासी भारतीय समुदाय को पारस्परिक रूप से लाभकारी गतिविधियों के लिए अपने पूर्वजों की भूमि कीसरकार और लोगों के साथ जुड़ने का एक मंच प्रदान करता है।अनुभव साझा करना-यह दुनिया के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले प्रवासी भारतीय समुदाय के बीच कनेक्टिविटी बढ़ाने में भी बहुत उपयोगी हैं और उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में अपने अनुभव साझा करने में सक्षम बनाता है। उपलब्धियों का सम्मानप्रवासी भारतीय सम्मान

पुरस्कार उन व्यक्तियों को दिया जाता है जिन्होंने भारत के विकास में असाधारण योगदान दिया है।पीबीडी भारतीय प्रवासियों को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है।सरकार के साथ जुड़ना-पीबीडी सरकार के लिए प्रवासियों के साथ जुड़ने और भारत की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने का एक अवसर है।क्षेत्रीय कार्यक्रम क्षेत्रीय प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन उन प्रवासियों तक पहुँचने के लिए आयोजित किए जाते हैं जो मुख्य पीबीडी कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाते हैं।

साथियों बात अगर हम दिनांक 9 जनवरी 2025 को माननीय पीएम द्वारा व 10 जनवरी 2025 को माननीय राष्ट्रपति द्वारा संबोधन की करें तो, पीएम ने संबोधित करते हुए कहा कि दुनियाँ में जब तलवार के जोर पर साम्राज्य बढ़ाने का दौर था, तब हमारे सम्राट अशोक ने यहां शांति का रास्ता चुना था, हमारी विरासत का ये वही बल है, जिसकी प्रेरणा से आज भारत, दुनियाँ को ये कह पाता है कि भविष्य युद्ध में नहीं है, बुद्ध में है।इस कार्यक्रम में 70 देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए हैं, यह सम्मेलन 10 जनवरी तक चला है, जिसका समापन राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू नें किया। पीएम ने गुरुवार को भारतीय प्रवासियों के लिए स्पेशल टूरिस्ट ट्रेन को हरी झंडी दिखाई। दिल्ली के निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से चली ट्रेन तीन सप्ताह तक कई टूरिस्ट प्लेस तक जाएग, उन्होंने हमेशा प्रवासी भारतीयों को भारत का राजदूत माना है।उन्होंने दुनिया भर में रहने वाले भारतीयों से मिलकर और उनसे वार्तालाप करके अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।व कहा कहा कि उनसे मिलने वाला प्यार और आशीर्वाद अविस्मरणीय है और हमेशा उनके साथ रहेगा। भारतीय प्रवासियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए तथा वैश्विक मंच पर उन्हें गर्व से सिर ऊंचा करने का अवसर प्रदान करने के लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए, कहा कि पिछले दशक में उन्होंने अनेक वैश्विक प्रमुखों से भेंट की, जिनमें से सभी ने भारतीय प्रवासियों की उनकेसामाजिक मूल्यों तथा अपने-अपने समाजों में योगदान के लिए प्रशंसा की। भारत न केवल लोकतंत्र की जननी है, बल्कि लोकतंत्र भारतीय जीवन का अभिन्न अंग है। उन्होंने कहा कि भारतीय स्वाभाविक रूप से विविधता को अपनाते हैं और स्थानीय नियमों और परंपराओं का सम्मान करते हुए जिस समाज में शामिल होते हैं,उसमें सहज रूप से एकीकृत होते हैं।भारतीय अपने मेजबान देशों की सत्यनिष्ठा से सेवा करते हैं, उनके विकास और समृद्धि में योगदान देते हैं, जबकि वे हमेशा भारत को अपने हृदय के करीब रखते हैं, भारत की हर प्रसन्नता और उपलब्धि का महोत्सव बेहद उत्साह के साथ मनाते हैं। भारत अब विश्व बंधु के रूप में पहचाना जाता है और प्रवासी भारतीयों से अपने प्रयासों को बढ़ाकर इस वैश्विक संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने का आग्रह किया।उन्होंने अपने-अपने देशों में, विशेष रूप से स्थानीय निवासियों के लिए पुरस्कार समारोह आयोजित करने का सुझाव दिया,ये पुरस्कार साहित्य, कला और शिल्प, फिल्म तथा रंगमंच जैसे विभिन्न क्षेत्रों में प्रमुख व्यक्तियों को दिए जा सकते हैं।उन्होंने प्रवासीभारतीयों को भारतीय दूतावासों और वाणिज्य दूतावासों के सहयोग से उपलब्धि हासिल करने वालों को प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि इससे स्थानीय लोगों के साथ व्यक्तिगत संबंध और भावनात्मक जुड़ाव बढ़ेगा।स्थानीय भारतीय उत्पादों को वैश्विक बनाने में प्रवासी समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हुए उनसे स्थानीय या ऑनलाइन मेड इन इंडिया खाद्य पैकेट, कपड़े और अन्य सामान खरीदने का आग्रह किया और इन उत्पादों को अपने रसोईघरों, ड्राइंग रूम और उपहारों में शामिल करने का आग्रह किया, यह एक विकसित भारत के निर्माण में एक महत्वपूर्ण योगदान होगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 18 वाँ प्रवासी भारतीय सम्मेलन 8-10 जनवरी 2025 का आगाज़-पूरे विश्व में भारतीयता, संस्कृत सामाजिक मूल्यों की सुगंध बिखेरी।दुनियाँ का हर नेता अपने देश में प्रवासी भारतीयों की तारीफ़ जरुर करता है।हम भारतीय हमारे बड़े बुजुर्गों व भारत की समृद्धि विरासत का प्रतिबिंब है,जिस देश में रहते हैं वहां के समाज से जुड़कर उस देश का विकास करते हैं।

# नई टाटा टिआगो और टिगोर की वेरिएंट वाइज कीमतों का खुलासा, नए फीचर्स समेत मिला रिफ्रेश डिजाइन

परिवहन विशेष न्यूज

नई Tata Tiago और Tigor के ICE और EV को पेश किया गया है। इसके साथ ही इसके नई कीमतों का भी खुलासा भी कर दिया गया है। नई 2025 Tata Tiago और Tigor में नए फीचर्स भी दिए गए हैं। नई Tata Tiago की शुरुआती कीमत 4 .99 लाख रुपये और नई Tata Tigor की शुरुआती कीमत 5 .99 लाख रुपये है।

**नई दिल्ली।** टाटा मोटर्स ने टियागो और टिगोर मॉडलों की मदद से भारतीय बाजार में अपनी एक मजबूत पोर्टफोलियो बनाया था, उन्हें नए बदलाव के साथ पेश किया है। इनके ICE और इलेक्ट्रिक दोनों वर्जन को कंपनी ने अपडेट किया है। इसके साथ ही कंपनी की तरफ से इनके वेरिएंट वाइज कीमतों का भी खुलासा कर दिया गया है। आइए जानते हैं कि नई Tata Tiago और Tigor को किन कीमतों में लाया गया है।

**नई Tata Tiago (ICE और EV)**

इसके पेट्रोल मॉडल में बॉटम ग्रिल में कंट्रास्टिंग क्रोम एलिमेंट्स दिए गए हैं। वहीं, इसके इलेक्ट्रिक वेरिएंट में लोअर ग्रिल में बॉडी-कलर एलिमेंट्स दिए गए हैं। इसके ICE और EV दोनों में ही नई हेडलाइट्स दिए गए हैं। इसमें एलईडी से भरा रिफ्लेक्टर सेटअप दिया गया है। इसमें एलईडी डीआरएल और फॉग लाइट्स को पहले की तरह बरकरार रखा गया है।

इसके साथ ही शार्क-फिन एंटीना दिया गया है। इसमें 10.25 इंच की इंफोटेनमेंट स्क्रीन दी गई है, जो एंड्रॉइड ऑटो और ऐपल कारप्ले स्पोर्ट करता करता है। इसमें पुश-बटन स्टार्ट और नेक्सन से नया टू-स्पोक स्टीयरिंग एक इल्यूमिनेटेड लोगो दिया गया है। इसमें एडवांस इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर भी शामिल किया गया है। इसके अलावा क्रूज़ कंट्रोल, टीपीएमएस, टाइप-सी चार्जिंग पोर्ट समेत और भी फीचर्स को दिया गया है।

टियागो EV में पहले की तरह ही 19.2 kWh और 24 kWh बैटरी पैक ऑप्शन दिया गया है, जो एक बार चार्ज करने पर 315 किमी तक की रेंज मिलती है।

**वेरिएंट वाइज कीमत**

Tata Tiago के पेट्रोल एक्स-शोरूम कीमत बेस XE के लिए 4.99 लाख रुपये और टियागो XZ NRG CNG वेरिएंट के लिए 8.2 लाख रुपये है। वहीं, इसके इलेक्ट्रिक वर्जन की एक्स-शोरूम कीमत 7.99 लाख रुपये है।

**पेट्रोल**

XE - 4,99,990 रुपये (एक्स-शोरूम)
XM - 5,69,990 रुपये (एक्स-शोरूम)
XT - 6,29,990 रुपये (एक्स-शोरूम)
XZ - 6,89,900 रुपये (एक्स-शोरूम)
XZ NRG - 7,19,990 रुपये (एक्स-शोरूम)
XZ+ - 7,29,990 रुपये (एक्स-शोरूम)

iCNG

XE CNG - 5,99,990 रुपये (एक्स-शोरूम)
XM CNG - 6,69,990 रुपये (एक्स-शोरूम)
XT CNG - 7,29,990 रुपये (एक्स-शोरूम)
XZ CNG - 7,89,900 रुपये (एक्स-शोरूम)
XZ NRG CNG- 8,19,990 रुपये (एक्स-शोरूम)

2025 Tata Tigor

Tata Tigor

टाटा मोटर्स ने इसके ICE और EV दोनों वर्जन के मॉडल को अपडेट किया है, लेकिन इसके इलेक्ट्रिक वर्जन की जानकारी शेयर नहीं की गई है। टिगोर में मिले अपडेट की बात करें तो इसमें ऊपरी ग्रिल पर क्रोम हाइलाइट्स दी गई है, जो एक अलग दृश्य अंतर पैदा करते हैं।

इसमें 10.25 इंच की इंफोटेनमेंट स्क्रीन दी गई है, जो वायरलेस तरीके से एंड्रॉयड ऑटो और ऐपल कारप्ले को सपोर्ट करती है। इसके ट्रिम में नया नया लक्स टॉप-वेरिएंट भी शामिल किया गया है, जिसमें ज्यादा फीचर्स को शामिल किया गया है।

इसमें फीचर्स के रूप में पुश-बटन स्टार्ट के साथ कीलेस एंट्री के साथ-साथ 360-डिग्री कैमरा, अलग-अलग फ्रंट सेंटर आर्मरेस्ट, डुअल-टोन केबिन थीम और नेक्सन से लेदर-रैप्ड नया 2-स्पोक स्टीयरिंग व्हील दिया गया है।

# FADA: 2024 में इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर बिक्री ने पकड़ी रफ्तार, ओला और टीवीएस सबसे आगे

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में 2024 में इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर (E2W) की बिक्री ने 33.48% की बढ़त के साथ 11,48,529 यूनिट्स का आंकड़ा छुआ। आइए जाते हैं देश में कैसी रही इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की बिक्री।

भारत में इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर (E2W) बाजार तेजी से बढ़ रहा है। फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन्स (FADA) द्वारा जारी ताजा आंकड़ों के मुताबिक, 2024 में इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर की कुल रिटेल बिक्री 11,48,529 यूनिट्स पर पहुंच गई, जो 2023 की 8,60,420 यूनिट्स की तुलना में 33.48% की वार्षिक वृद्धि दर्शाती है। आइए, इस क्षेत्र के अहम आंकड़ों पर नजर डालते हैं।

**ओला इलेक्ट्रिक ने बनाया दबदबा**

ओला इलेक्ट्रिक टेक्नोलॉजीज ने 4,07,559 यूनिट्स की बिक्री के साथ अपनी शीर्ष स्थिति बरकरार रखी। कंपनी की बिक्री 2023 में बेची गई 2,67,378 यूनिट्स की तुलना में 52.43% अधिक रही।

**टीवीएस मोटर कंपनी रही दूसरे स्थान पर**

टीवीएस मोटर कंपनी ने 2,20,521 यूनिट्स की बिक्री की, जो 2023 की 1,66,580 यूनिट्स की तुलना में 32.38% की वृद्धि है।

**बजाज ऑटो की तेज़ रफ्तार**

बजाज ऑटो ग्रुप ने 1,93,475 यूनिट्स की बिक्री के साथ 151.95% की वार्षिक वृद्धि दर्ज की। 2023 में यह आंकड़ा 76,792 यूनिट्स था।

**अन्य मुख्य प्रदर्शनकर्ता**

एथर एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड ने 1,26,174 यूनिट्स की बिक्री करते हुए 20.47% की वृद्धि दर्ज की।

हीरो मोटोकॉर्प लिमिटेड ने 43,695 यूनिट्स की बिक्री के साथ 292.20% की शानदार वृद्धि दर्ज की। 2023 में यह आंकड़ा 11,141 यूनिट्स था।

ग्रीव्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्राइवेट लिमिटेड ने 35,057 यूनिट्स बेचकर 45.82% की वृद्धि हासिल की।

**गिरावट का सामना करने वाले ब्रांड**

चेतक टेक्नोलॉजी लिमिटेड की 2024 में केवल 4 यूनिट्स की बिक्री हुई, जबकि 2023 में 4,851 यूनिट्स बिकी थीं। इस दौरान कंपनी ने 99.92% की गिरावट दर्ज की। वहीं, ओकाया ईवी प्राइवेट लिमिटेड ने 6,102 यूनिट्स की बिक्री की, जो 61.42% की गिरावट को दर्शाता है।

अन्य इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर निर्माताओं की बिक्री में भी 62.73% की गिरावट आई। जहां 2024 में 58,615 यूनिट्स बिकीं, जबकि 2023 में यह आंकड़ा 1,57,251 यूनिट्स था। इस दौरान इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर का बाजार हिस्सा 2023 में 5.0% से बढ़कर 2024 में 6.1% हो गया, जो उपभोक्ताओं की बढ़ती रुचि और ग्रीन मोबिलीटी की ओर झुकाव को दर्शाता है।

इन आंकड़ों में तेलंगाना (TS) के डेटा को शामिल नहीं हैं। फाडा की यह रिपोर्ट 4 जनवरी 2025 तक 1,434 क्षेत्रीय परिवहन कार्यालयों (RTO) में से 1,373 से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित हैं।

# टाटा ने पिछले ऑटो एक्सपो में जिन मॉडलों का कॉन्सेप्ट किया पेश, उनमें से कौन भरेगी रफ्तार...

परिवहन विशेष न्यूज

जनवरी के 17 तारीख से लेकर 22 तारीख तक आयोजित होने वाला है। इस Auto Expo में Tata Motors भी अपनी गाड़ियों को दिखाने वाली है। हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि पिछले ऑटो एक्सपो में टाटा मोटर्स ने जिन गाड़ियों का कॉन्सेप्ट मॉडल पेश किया था क्या वो इस बार लॉन्च हो सकती है या फिर और इंतजार करना पड़ेगा।

**नई दिल्ली।** भारतीय बाजार में कई ऑटोमेकर की तरफ से कई मॉडल पेश किए जाते हैं। कार निर्माता कंपनियों की तरफ से भविष्य में आने वाली गाड़ियों के कॉन्सेप्ट मॉडल को भारत में लगने वाले ऑटो एक्सपो में दिखाती है। कई बार देखने के लिए मिलता है कि जिन गाड़ियों को ऑटो एक्सपो में कॉन्सेप्ट मॉडल के दिखाया था वह बाजार में बिक्री के आई ही नहीं। कुछ ऐसा ही टाटा मोटर्स की कॉन्सेप्ट कार के साथ भी देखने के लिए मिला है। पिछले Auto Expo में टाटा मोटर्स की तरफ से कई गाड़ियों को पेश किया गया था, जिनमें से कुछ का इंतजार लोगों को अभी भी है। आइए जानते हैं कि वह कॉन्सेप्ट कार कौन-सी है और उनका भारत में लॉन्च होने में अभी कितना इंतजार करना पड़ सकता है।

**Tata Sierra EV**

Tata Sierra के इलेक्ट्रिक वर्जन को भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2025 में भी पेश किया जाएगा। यह तीसरी बार होगा कि कंपनी इसे ऑटो एक्सपो में लोगों को शोकेस करेगी। टाटा इपनी इस इलेक्ट्रिक कार को साल 2020 में हुए ऑटो एक्सपो में कॉन्सेप्ट के रूप में पेश कर चुकी है। इसके बाद साल 2023 में इसके डेवलप मॉडल को पेश किया गया था। उस दौरान बताया गया था कि टाटा अपनी इस कार में दो बैटरी पैक 60-80 kWh देगी, जो फुल चार्ज होने के बाद करीब 500 किमी से ज्यादा की रेंज देने में सक्षम रहेगी।

**Tata Harrier EV**

Tata Sierra EV की तरह ही Harrier EV भी भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2025 में तीसरी बार पेश हो सकती है। इसके कॉन्सेप्ट मॉडल को सबसे पहले साल 2023 के Auto Expo में पेश किया गया था। इसके बाद साल 2024 में हुए भारत मोबिलिटी में डेवलप मॉडल के रूप में पेश हुई थी। इसके लॉन्च होने की उम्मीद ज्यादा है क्योंकि इसके टेस्टिंग मॉडल को कई बार भारत की सड़कों पर देखा जा चुका है, जिससे इसके कई डिटेल्स भी देखने के लिए मिले है। टेस्टिंग के दौरान स्पॉट हुई टाटा हैरियर ईवी का मॉडल कॉन्सेप्ट से काफी मिलता-जुलता लगा है। वहीं, उम्मीद की जा रही है कि इलेक्ट्रिक वर्जन में ICE वर्जन से ज्यादा फीचर्स मिल सकते हैं। वहीं, अनुमान लगाया जा रहा है कि यह सिंगल चार्ज में 500 किमी से ज्यादा की रेंज के साथ आ सकती है।

**क्या टाटा के कॉन्सेप्ट मॉडल होंगे लॉन्च**

जैसा कि हमने आपको ऊपर बताया कि Tata Harrier EV को कई बार भारत में टेस्टिंग के दौरान स्पॉट किया जा चुका है। जिसे देखते हुए इसके Auto Expo 2025 में लॉन्च होने की उम्मीद है। वहीं, बात करें Tata Sierra EV की तो यह इस साल भी सिर्फ लोगों को दिखाने के लिए कंपनी ऑटो एक्सपो के अपने पवेलियन में रखने वाली है। अब ये दोनों टाटा की इलेक्ट्रिक कारें Auto Expo 2025 में लॉन्च होती है या फिर अभी इनका इंतजार करना पड़ेगा ये तो भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2025 के दौरान ही पता चलेगा।

# टाटा नेक्सॉन को ऑटो एक्स्पो से पहले मिला अपडेट, नए कलर और वेरिएंट में हुई लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

Auto Expo 2025 से पहले टाटा मोटर्स ने अपने तीन मॉडलों Tata Tiago Tiago EV और Tigor समेत Tata Nexon को भी अपडेट किया है। टाटा नेक्सन को दो नए कलर और तीन नए वेरिएंट के साथ अपडेट किया गया है। अब इसके फियरलेस पर्पल कलर थीम को बंद कर दिया गया है। आइए जानते हैं कि Tata Nexon क्या नए अपडेट मिले।

**नई दिल्ली।** साल 2025 की शुरुआत में टाटा मोटर्स ने Tata Tiago, Tiago EV और Tigor को अपडेट करने के साथ ही Tata Nexon को भी अपडेट किया है। इस अपडेट में दो नए कलर ऑप्शन और तीन नए वेरिएंट को शामिल किया गया है। दो नए कलर ऑप्शन रॉयल ब्लू और ग्रासलैंड बेज है, जबकि तीन वेरिएंट प्योर प्लस, क्रिएटिव और क्रिएटिव प्लस PS है। इसके फियरलेस पर्पल कलर थीम को बंद कर दिया गया है। आइए जानते हैं कि साल 2025 में Tata Nexon को क्या अपडेट मिले हैं।

**नए वेरिएंट**

Tata Nexon Pure Plus
कीमतः 9.69 लाख रुपये (एक्स-शोरूम)

इस नए वेरिएंट को स्मार्ट प्लस एस और प्योर प्लस एस वेरिएंट के बीच रखा गया है। इसमें पिछले स्मार्ट प्लस एस वेरिएंट की तुलना में कई फीचर्स दिए गए हैं, जो निम्नलिखित है।

10.25-इंच टचस्क्रीन
वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले
4 स्पीकर
सेमी-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर
एचडी रिवर्स पार्किंग कैमरा
ऑटो-फोल्डिंग आउटसाइड रियर व्यू मिरर (ओआरवीएम)
चारों पावर विंडो
हाई-एडजेस्टेबल ड्राइवर सीट
फ्रंट सेंटर आर्मरेस्ट
रियर एसी वेंट
बॉडी-कलर डोर हैंडल
शार्क फिन एंटीना

इसे तीन इंजन ऑप्शन के साथ लेकर आया गया है, जो 1.2-लीटर टर्बो-पेट्रोल, 1.2-लीटर टर्बो-पेट्रोल+सीएनजी और 1.5 लीटर डीजल इंजन है।

**Tata Nexon**

Tata Nexon Creative
कीमतः 10.99 लाख रुपये (एक्स-शोरूम)

इस नए वेरिएंट को प्योर प्लस एस और क्रिएटिव प्लस एस वेरिएंट के बीच रखा गया है। इसमें Pure Plus S वेरिएंट की तुलना में ये निम्नलिखित फीचर्स दिए गए हैं।

360-डिग्री कैमरा
16-इंच एलॉय व्हील
पुश बटन स्टार्ट/स्टॉप
टच-इनेबल्ड ऑटो एसी पैनल
क्रूज कंट्रोल
रियर वाइपर और वॉशर
USB टाइप A और टाइप C चार्जर
कूल्ड ग्लोव बॉक्स
टच-इनेबल्ड स्टीयरिंग व्हील कंट्रोल

इसे भी Pure Plus वेरिएंट की तरह तीन इंजन ऑप्शन में लॉन्च किया गया है, जो 1.2-लीटर टर्बो-पेट्रोल, 1.2-लीटर टर्बो-पेट्रोल+सीएनजी और 1.5 लीटर डीजल इंजन है।

Tata Nexon
Tata Nexon Creative Plus PS
कीमतः 12.29 लाख रुपये (एक्स-शोरूम)

इन नए Creative Plus PS वेरिएंट को क्रिएटिव प्लस S और फियरलेस प्लस PS वेरिएंट के बीच रखा गया है, जो वन-बिलो-टॉप वेरिएंट है।

पैनोरमिक सनरूफ
Bi-एलईडी हेडलैंप
कनेक्टेड एलईडी टेल लाइट
कॉर्नरिंग फ़ंक्शन के साथ फ्रंट फॉग लैम्प
वायरलेस फ़ोन चार्जर
टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS)
रियर डिफॉगर
कप होल्डर के साथ रियर सीट आर्मरेस्ट
कीलेस एंट्री
रियर पार्सल ट्रे
6 स्पीकर (2 ट्वीटर सहित)
फ्रंट पार्किंग सेंसर

इसे भी बाकी दो वेरिएंट की तरह ही तीन इंजन ऑप्शन के साथ लाया गया है।

# 12 राज्यों में 5738 पीएम ई-बसों को दी गई मंजूरी, 2025 के शुरुआती महीनों में शुरू हो जाएगा संचालन

परिवहन विशेष न्यूज

पीएम ई-बसों के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए अब तक 66 शहरों में बिहाइंड द मीटर पावर इंफ्रास्ट्रक्चर और सिविल डिपो इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए 884 करोड़ रुपये की मंजूरी दी जा चुकी है जिसमें 438 करोड़ रुपये राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश को जारी भी कर दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त केंद्र सरकार पीएम ई बसों में स्वचालित किराया संग्रह प्रणाली के लिए काम कर रही है।

**नई दिल्ली।** पीएम ई-बस सेवा के तहत सौ से अधिक शहरों में इलेक्ट्रिक बसों का संचालन इसी साल के शुरुआती महीने में आरंभ हो जाएगा। 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के 77 शहरों की ओर से मिले प्रस्तावों को मंजूरी प्रदान की गई है। इन शहरों की ओर से अब तक 5738 बसों के प्रस्ताव मिले हैं। अधिकांश में टेंडर जारी कर दिए गए हैं। केंद्रीय शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू ने दैनिक जागरण को बताया कि पीएम ई बस सेवा के जरिये केंद्र सरकार शहरी क्षेत्रों में परिवहन के ढांचे को नए दौर में ले जाना चाहती है।

**2037 तक चलेगी योजना**

इस योजना के तहत दस हजार इलेक्ट्रिक बसों की तैनाती के लिए बीस हजार करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता दी जाएगी। योजना मार्च 2037 तक चलेगी। साहू के अनुसार यह योजना इसलिए शहरी सुधार की दृष्टि से खासी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके तहत पात्र शहरों में बस डिपो और चार्चिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास और आधुनिकीकरण के लिए भी सहायता प्रदान की जाएगी। पीएम ई-बसों के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए अब तक 66 शहरों में बिहाइंड द मीटर पावर इंफ्रास्ट्रक्चर और सिविल डिपो इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए 884 करोड़ रुपये की मंजूरी दी जा चुकी है, जिसमें 438 करोड़ रुपये राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश को जारी भी कर दिए गए हैं।

**इन राज्यों को मिली ई-बसों को मंजूरी**

जिन राज्यों के शहरों के लिए ई-बसों को मंजूरी दी गई है, उनमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, ओडिशा, बिहार, छत्तीसगढ़, राजस्थान, असम शामिल हैं। इसी तरह छत्तीसगढ़ में बिलासपुर, कोरबा, रायपुर, बिहार में गया, पूर्णिया, भागलपुर, मुजफ्फरपुर, पटना, राजस्थान में अजमेर, भीलवाड़ा, उदयपुर, मध्य प्रदेश में इंदौर, महाराष्ट्र में उल्हासनगर, अकोला और कोल्हापुर, ओडिशा में राउरकेला, गुजरात में भावनगर, गांधीनगर, जामनगर, राजकोट और वडोदरा, मध्य प्रदेश में भोपाल और उज्जैन में बस डिपो और चार्जिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर निर्माण को केंद्र सरकार ने अपनी मंजूरी दी है।

**दूसरे चरण में मिलेगी केंद्रीय सहायता**

साहू ने बताया कि इस योजना के दूसरे चरण में ग्रीन अर्बन मोबिलिटी परियोजनाओं के लिए केंद्रीय सहायता देने का निर्णय किया गया है। ये बस सेवाओं के लिए पूरक योजना साबित होगी। इसके अतिरिक्त केंद्र सरकार पीएम ई बसों में स्वचालित किराया संग्रह प्रणाली के लिए काम कर रही है।

# जनसंख्या वृद्धि में गिरावट देश के लिए खतरा या सकारात्मक बदलाव?

विजय गर्ग

भारत में तेजी से बढ़ती जनसंख्या को गरीबी और पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार माना जाता रहा है। इस पर अंकुश लगाने के लिए ही सरकार ने सदी के सातवें दशक में 'हम दो, हमारे दो' का नारा देकर लोगों को परिवार नियोजन के प्रति जागरूक किया।

देश में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता बढ़ने और शहरीकरण की वजह से इसका असर भी दिख रहा है और जनसंख्या वृद्धि में तेजी से गिरावट आई है। कुछ समुदायों में तो कुल प्रजनन दर (टीएफआर) घट कर रिप्लेसमेंट रेट 2.1 प्रतिशत से भी नीचे चली गई है।

हाल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने इसी पर चिंता जताई है। उन्होंने कहा है कि अगर टीएफआर 2.1 प्रतिशत से नीचे जाती है तो समाज अपने आप खत्म हो जाएगा। ऐसे में उन्होंने लोगों से कम से कम तीन बच्चे पैदा करने की अपील की है।

जापान में भी आशंका जताई गई है कि अगर टीएफआर नहीं बढ़ाई गई तो अगले 120 वर्ष में जापान गायब हो जाएगा। जनसंख्या वृद्धि में गिरावट क्या देश और समाज के अस्तित्व के लिए खतरा बन सकती है, इसकी पड़ताल ही आज का अहम मुद्दा है?

**क्यों गिर रही है प्रजनन दर**

शहरीकरण और आधुनिक जीवन शैलीः शिक्षा, प्रोफेशन और स्वास्थ्य सुविधाओं तक बेहतर पहुंच की वजह से महिलाएं आम तौर पर कम बच्चे पैदा करना चाहती हैं।

देर से शादी होनाः बढ़ती आकांक्षाओं और करियर बनाने की प्राथमिकताओं की वजह से युवा अब देर से शादी कर रहे हैं। इसकी वजह से बच्चे पैदा करने की अवधि कम हो गई है।

परिवार नियोजन और जागरुकताः परिवार नियोजन सेवाएं और गर्भनिरोधक अब आसानी से उपलब्ध हैं। इससे दंपती यह तय करने में सक्षम हैं कि उनके कितने बच्चे होने चाहिए।

आर्थिक दबावः जीवन जीने की लागत तेजी से बढ़ रही है। खास कर शहरों में। इससे एक से अधिक बच्चों का पालन-पोषण करना चुनौतीपूर्ण हो गया है।

**कैसे होगा भारत का भविष्य?**

घटती जनसंख्या वृद्धि देश के सामाजिक -आर्थिक परिदृश्य को बदल देगी।

बुजुर्गों की आबादी बढ़ने से उनकी देखभाल के लिए सेवाएं देने वालों की मांग बढ़ेगी।

कम बच्चे होने से युवाओं को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण मुहैया कराने पर निवेश बढ़ेगा।

शहरी इलाके बदलते परिदृश्य के हिसाब से खुद को आसानी से ढाल पाएंगे लेकिन उम्रदराज लोगों की अधिक आबादी के साथ ग्रामीण इलाकों में दिक्कतें बढ़ेंगी।

**सकारात्मक असर**

ज्यादा मिलेंगे संसाधन, बेहतर होगा जीवन स्तर

बेहतर जीवन स्तरः परिवार में कम बच्चे होंगे तो कमाने वाले पर निर्भर सदस्य कम होंगे। इससे उनको गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास की सुविधा मिलेगी और जीवन स्तर बेहतर होगा।

टिकाऊ संसाधन प्रबंधनः जनसंख्या बढ़ने की रफ्तार सुस्त होने से प्राकृतिक संसाधनों जैसे पानी, जमीन, ऊर्जा पर दबाव कम होगा।

महिला सशक्तिकरणः परिवार छोटे होने से महिलाओं को शिक्षा हासिल करने और करियर बनाने के ज्यादा मौके मिलेंगे। इससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलेगा।

**नकारात्मक प्रभाव**

आर्थिक और जनसांख्यिकी से जुड़ी चुनौतियां

बढ़ेगी बुजुर्गों की आबादीः जनसंख्या वृद्धि में गिरावट जारी रहने से 2050 तक भारत में बुजुर्गों की आबादी काफी अधिक हो जाएगी। इससे स्वास्थ्य सुविधाओं पर दबाव बढ़ेगा।

श्रमिकों की किल्लतः कुल जनसंख्या में काम करने योग्य आबादी की हिस्सेदारी कम होने से श्रमिकों की कमी हो जाएगी। यह आर्थिक विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। इसका असर उन उद्योगों पर ज्यादा दिखेगा, जहां अधिक श्रमिकों की जरूरत होती है।

नहीं मिलेगा युवा आबादी का लाभः भारत की जनसंख्या में एक बड़ा हिस्सा युवाओं का है। अभी हमें जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ मिल रहा है। लेकिन घटती जनसंख्या वृद्धि हमें इस लाभ से दूर ले जाएगी।

इन्हीं समस्याओं से जूझ रहा है जापान

जापान जैसे देश इन दिनों इन्हीं समस्याओं का सामना कर रहे हैं। जापान की अर्थव्यवस्था में सुस्ती या ठहराव का कारण यह है कि यहां आबादी का बड़ा हिस्सा उम्रदराज लोगों का है। काम करने वालों की संख्या कम है।

धरती से गायब होने वाला पहला देश बन सकता है दक्षिण कोरिया

तेज आर्थिक विकास और शहरीकरण के लिए जाना गया दक्षिण कोरिया इन दिनों अप्रत्याशित प्रजनन संकट से जूझ रहा है। दक्षिण कोरिया की जन्म दर गिर कर इस स्तर पर पहुंच चुकी है कि अगर यही ट्रेंड जारी रहा तो 21वीं सदी के अंत तक देश की जनसंख्या मौजूदा स्तर की एक तिहाई रह जाएगी।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब**

# महाकुंभ और मकर संक्रांति का गहरा वैज्ञानिक महत्व है : विजय गर्ग

महाकुंभ और मकर संक्रांति दोनों का गहरा वैज्ञानिक और खगोलीय महत्व है, जो आकाशीय पिंडों की गतिविधियों और पृथ्वी पर उनके प्रभाव में निहित है। इन घटनाओं के पीछे का वैज्ञानिक तर्क इस प्रकार हैः

**मकर संक्रांतिः वैज्ञानिक व्याख्या**

1. खगोलीय घटना

मकर संक्रांति सूर्य के मकर राशि में संक्रमण का प्रतीक है, जो सूर्य की उत्तर की ओर यात्रा (उत्तरायण) का संकेत देता है।

यह परिवर्तन शीतकालीन संक्रांति के बाद होता है जब उत्तरी गोलार्ध में दिन लंबे होने लगते हैं, जो गर्मी और नवीनीकरण की शुरुआत का प्रतीक है।

**2. सौर विकिरण में परिवर्तन**

सूर्य के कर्क रेखा की ओर बढ़ने से उत्तरी गोलार्ध में सौर ऊर्जा बढ़ती है, जो जलवायु और कृषि चक्र को प्रभावित करती है।

यह संक्रमण जैविक लय को प्रभावित करता है, कायाकल्प और जीवन शक्ति को प्रोत्साहित करता है।

**3. विटामिन डी अवशोषण**

इस अवधि के दौरान, लोग पारंपरिक रूप से धूप सेंकते हैं या धूप में अधिक समय बिताते हैं, जिससे शरीर को अधिक विटामिन डी का उत्पादन करने में मदद मिलती है, जो हड्डियों के स्वास्थ्य और प्रतिरक्षा के लिए आवश्यक है।

**4. संस्कारों का वैज्ञानिक आधार**

तिल और गुड़ का सेवन केवल सांस्कृतिक नहीं है; ये खाद्य पदार्थ पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं जो ठंड के महीनों के दौरान शरीर को गर्म और ऊर्जावान बनाए रखने में मदद करते हैं।

**महाकुंभः वैज्ञानिक व्याख्या**

**1. खगोलीय संरेखण**

महाकुंभ तब आयोजित होता है जब सूर्य मकर राशि में, चंद्रमा मेष राशि में और बृहस्पति कुंभ राशि में होता है। माना जाता है कि ये खगोलीय संरेखण पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को बढ़ाते हैं और मानव स्वास्थ्य और चेतना को प्रभावित करते हैं।

**2. नदियों की शुद्धि एवं स्नान**

माना जाता है कि इस संरेखण के दौरान गंगा जैसी नदियों में प्राकृतिक विषहरण गुणों में वृद्धि हुई है। इस दौरान जल निकायों के पास बढ़ी हुई ओजोन और यूवी विकिरण माइक्रोबियल कमी और शुद्धिकरण में योगदान दे सकती है।

**3. सामूहिक एकत्रीकरण और प्रतिरक्षा**

महाकुंभ में भागीदारी में सांप्रदायिक गतिविधियां और विविध वातावरण का अनुभव शामिल है, जो माइक्रोबायोम एक्सचेंज के माध्यम से प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित कर सकता है।

**4. मौसमी बदलाव और स्वास्थ्य**

महाकुंभ का समय मौसमी बदलाव के साथ मेल खाता है जब बीमारियों की संभावना अधिक होती है। नदियों में स्नान, उपवास और अन्य अनुष्ठान विषहरण को बढ़ावा देते हैं और शरीर को परिवर्तन के साथ तालमेल बिठाने में मदद करते हैं।

**निष्कर्ष**

दोनों घटनाएँ, मकर संक्रांति और महाकुंभ, महत्वपूर्ण खगोलीय गतिविधियों के साथ संरेखित होती हैं जो मौसमी परिवर्तनों, मानव शरीर विज्ञान और पर्यावरण को प्रभावित करती हैं। वे प्राचीन ज्ञान को दर्शाते हैं जो खगोलीय ज्ञान को स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने वाली प्रथाओं के साथ एकीकृत करता है।

# आईआईटी-जेईई से परे: महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाएं

विजय गर्ग

यह वर्ष का वह समय है जब इंजीनियरिंग के इच्छुक उम्मीदवार अपने अवसरों को अधिकतम करने और अपने सपनों के इंजीनियरिंग संस्थान के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए शीर्ष रैंक हासिल करने के लिए कमर कसते हैं। भारत की शीर्ष इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाओं में से एक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान-संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आईआईटी-जेईई) मुख्य २२ जनवरी से ३० जनवरी, २०२५ के बीच निर्धारित है, इसके बाद 18 मई, २०२५ को आईआईटी-जेईई एडवांस्ड होगी। परीक्षा में बैठने के लिए लाखों छात्रों ने पंजीकरण कराया है - उन्हें उम्मीद है कि वे उपलब्ध कुछ हजार सीटों के लिए अर्हता प्राप्त कर लेंगे - इच्छुक इंजीनियरों को एक प्रतिष्ठित संस्थान में अपना प्रवेश सुरक्षित करने के लिए जेईई से परे अवसरों पर नजर रखनी चाहिए। भारत में प्रवेश परीक्षाओं का परिदृश्य बहुत बड़ा है, जिसमें छात्रों के लिए तलाशने के लिए कई विकल्प हैं, जो उनकी प्राथमिकताओं, शक्तियों और भविष्य के लक्ष्यों के आधार पर संभावनाओं की एक श्रृंखला प्रदान करते हैं। प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखते हुए, इंजीनियरिंग के उम्मीदवारों को अपनी सफलता की संभावनाओं को अधिकतम करने और कॉलेज में अपने विकल्पों को व्यापक बनाने के लिए आदर्श रूप से कम से कम पांच से सात प्रवेश परीक्षाएं देने पर विचार करना चाहिए। अभ्यर्थियों को एकाधिक प्रवेश परीक्षाओं के लिए आवेदन क्यों करना चाहिए? 1. बेहतर अवसर एकाधिक परीक्षाओं से अच्छे कॉलेज में सीट सुरक्षित करने की संभावना बढ़ जाती है। उम्मीदवार विभिन्न परीक्षाओं में अपने प्रदर्शन के आधार पर सर्वोत्तम विकल्प चुन सकते हैं। २. विविध कॉलेज विकल्प राज्य और राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं के मिश्रण से, उम्मीदवार सरकारी और निजी दोनों कॉलेजों का पता लगा सकते हैं। प्रवेश परीक्षाओं, भाग लेने वाले कॉलेजों और परामर्श प्रक्रियाओं को समझना एक रणनीतिक लाभ प्रदान कर सकता है। ३. वैयक्तिकृत फिट विभिन्न परीक्षाएं विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम, स्थान और रैंकिंग प्रदान करती हैं। उम्मीदवारों के लिए ऐसी परीक्षाओं का चयन करना महत्वपूर्ण है जो उनके पसंदीदा कॉलेज, कार्यक्रम और दीर्घकालिक लक्ष्यों के अनुरूप हों। विचार करने योग्य प्रमुख कारक प्रवेश परीक्षाओं को अंतिम रूप देने से पहले, समीक्षा करने के लिए कारकों की एक चेकलिस्ट यहां दी गई है: जेईई परसेंटाइल और अखिल भारतीय रैंक (एआईआर) कंप्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स और मैकेनिकल इंजीनियरिंग जैसी शीर्ष इंजीनियरिंग शाखाओं के लिए, उम्मीदवारों को प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश सुरक्षित करने के लिए कुछ निश्चित प्रतिशत या रैंक से ऊपर स्कोर करना होगा। कट-ऑफ़ और प्रारंभिक/समापन रैंक कट-ऑफ पिछले वर्ष की प्रतिस्पर्धात्मकता और रुझानों को समझने में मदद करता है। पसंदीदा कार्यक्रम और स्ट्रीम चाहे वह कोर इंजीनियरिंग शाखा हो, उच्च-मांग वाली स्ट्रीम या दोहरी डिग्री विकल्प हों, जब सही विकल्प चुनने की बात आती है तो यह जानना आवश्यक है कि संस्थान क्या पेशकश करते हैं। कॉलेज की प्रतिष्ठा और बुनियादी ढाँचा एनआईआरएफ (राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क) रैंकिंग, संकाय, प्लेसमेंट रिकॉर्ड, प्रयोगशाला सुविधाएं और परिसर जीवन जैसे कारक समग्र कॉलेज अनुभव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्थान प्राथमिकताएँ कुछ उम्मीदवार विशिष्ट राज्यों या शहरों में अध्ययन करना पसंद करते हैं। बेंगलुरु (जिसे भारत की सिलिकॉन वैली भी माना जाता है) या हैदराबाद (अपने तकनीकी केंद्रों के लिए जाना जाता है) जैसे क्षेत्रों में अध्ययन के लाभों को समझने से सूचित निर्णय लेने में मदद मिल सकती है। शुल्क संरचना और छात्रवृत्ति वित्तीय पहलू एक और प्रमुख विचार है। कुछ परीक्षाएं योग्यता के आधार पर छात्रवृत्ति, शुल्क माफी या वित्तीय सहायता के अवसर प्रदान करती हैं। लोकप्रिय इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाओं पर विचार करें यहां उन शीर्ष इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाओं की सूची दी गई है जो उम्मीदवार दे सकते हैं: 1. जेईई (मुख्य) राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों और केंद्रीय वित्त पोषित तकनीकी संस्थानों (सीएफटीआई) का प्रवेश द्वार, संयुक्त प्रवेश परीक्षा (मुख्य) कई सरकारी और निजी संस्थानों में सीटें सुरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण है। उच्च रैंकिंग वाले उम्मीदवार प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों की शीर्ष शाखाओं का लक्ष्य रख सकते हैं। २. जेईई (उन्नत) आईआईटी, आईआईएससी और अन्य शीर्ष संस्थानों में प्रवेश के लिए, जेईई (एडवांस्ड) विशिष्ट संस्थानों में उच्च प्रदर्शन करने वाले उम्मीदवारों के लिए अंतिम परीक्षा है। प्रतिस्पर्धा कड़ी है लेकिन पुरस्कार पर्याप्त हैं। ३. बिटसैट बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस पिलानी, गोवा और हैदराबाद में अपने परिसरों में प्रवेश के लिए यह परीक्षा आयोजित करता है। एक मजबूत स्कोर, विशेष रूप से कंप्यूटर विज्ञान जैसी प्रतिस्पर्धी शाखाओं के लिए, भारत के शीर्ष निजी इंजीनियरिंग संस्थानों में से एक के लिए दरवाजे खोल सकता है। 4. सीओएमईडीके (कर्नाटक के मेडिकल, इंजीनियरिंग और डेंटल कॉलेजों का संघ) यह परीक्षा कर्नाटक के इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रवेश के लिए पूरे भारत के उम्मीदवारों के लिए खुली है, जिसमें बेंगलुरु के शीर्ष संस्थान भी शामिल हैं, जो अपने जीवंत तकनीकी परिदृश्य के लिए जाना जाता है। 5. एईईई अमृता इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा (एईईई) अमृता विश्व विद्यापीठम द्वारा अपने परिसरों में प्रवेश के लिए आयोजित की जाती है।

# नाकामी में छिपी कामयाबी

विजय गर्ग

आज के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में ज्यादातर लोग एक काल्पनिक भय में जी रहे हैं। वे वर्तमान के सुख का उपभोग करने की अपेक्षा भविष्य को संवारने और उसमें उपजने वाली काल्पनिक चिंता के मायाजाल में उलझ रहे हैं, जबकि हमें यह तक नहीं पता कि आने वाला पल कैसा होगा। आपत्ति या विपत्ति का आना कोई निश्चित नहीं है। उसी तरह हो सकता है कि आने वाला पल बेहद अच्छा हो, लेकिन अपनी विफलता के मायावी भय में जीते हुए हम अपने वर्तमान को दांव पर लगा रहे हैं। अपनी जीवन शैली को बेहतर दिखाने के फेर में व्यर्थ ही चिंता की आग में जिए जा रहे हैं। यह दबाव समाज की अपेक्षा मन की उपज है जो वर्तमान को अशांत किए हुए है। कल क्या होगा और हमारी योजनाएं कहीं असफल न हो जाएं, बस इसी असुरक्षा के भाव में हम उलझे जा रहे हैं। क्या यह समझना सबसे महत्त्वपूर्ण काम रह गया है कि कल क्या होगा? ऐसा लगता है कि यह केवल हमारी कल्पना का हिस्सा है। अगर हम अपने मन को शांत रख सकें और अपनी क्षमताओं पर भरोसा करें, तो जीवन अधिक सरल और सुंदर हो सकता है।

हमें अपने बाल्यकाल से प्रेरणा लेते हुए जीवन में आगे बढ़ने की कोशिश करके देखना चाहिए। जिस तरह एक शिशु अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए बार-बार गिरता पड़ता है, ठीक उसी तरह हमें अपनी असफलताओं से घबराना छोड़कर बार-बार प्रयत्न करना चाहिए। जबकि आज की भागमभाग से भरी जिंदगी में हो इससे विपरीत रहा है। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हमारा सोचने का ढंग और मानसिकता बदलने लगती है और हम लगातार असफल होने के भय से कुंठित होने लगते हैं। हमारी मानसिकता आज इस दिशा में विकसित हो रही है कि हमें अपने उद्देश्य की प्राप्ति तो करनी है, लेकिन उस उद्देश्य प्राप्ति के मार्ग में मिलने वाली असफलताओं को हम स्वीकार नहीं कर पाते। जबकि असफलताएं भी उसी मार्ग का एक पड़ाव होती हैं। सफलता की इस नवीन परिभाषा, जिसमें असफलता की गुंजाइश का अभाव हो, इसमें उलझकर आत्मविश्वास में कमी आती है। इसलिए हमें बालमन से सीखने की जरूरत है कि निरंतर प्रयास ही सफल होने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, न कि डरकर और थक हारकर बैठ जाने से उद्देश्य प्राप्ति हो सकती है। एक शिशु अपनी हर असफलता से सीखता है और बार-बार उठकर चलने का प्रयास करता रहता है, न कि गिरने के डर से हार जाता है।

मानव इतिहास भी ऐसे अनेक महापुरुषों की असफलताओं से भरा पड़ा है जो बार - बार असफल होने पर अपने उद्देश्य की प्राप्ति शुमार की जंग में पराजित नहीं हुए और आखिरकार सफल होकर इतिहास में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज करवा गए। थामस एडिसन अनेक बार असफल होने के बावजूद बल्ब के अपने आविष्कार से दुनिया को रोशन कर गए और छोटे-से गांव का साधारण सा दिखने वाला एक बालक अपने अथक प्रयासों से भारत के मिसाइल पुरुष एपीजे अब्दुल कलाम के नाम से विख्यात हुआ। इस तरह सकारात्मक दृष्टिकोण और गिरने की प्रत्येक अवस्था से कुछ सीखने की आदत को अपने जीवन शैली में कर लिया जाए, तो निश्चित ही सफलता कदम चूम सकती है। सच यह है कि असफलता हमें सिखाती है कि सफलता का सही अर्थ क्या है। कामयाबी और असफलता उद्देश्य प्राप्ति के दो स्तंभ हैं। अपने प्रयासों में नाकामयाब होना जीवन में कोशिशों को बेहतर बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। प्रयासों से भयभीत होने की अपेक्षा उन्हें जीवन में अपना गुरु मान लेना चाहिए जो हमें सीखने का अवसर तो प्रदान करते ही हैं, जीवन को धैर्यवान बनाने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। यह असफलता ही है जो हमें संघर्षों से भरे जीवन में हमारे प्रयासों का मूल्य बाताती है। सीखने या प्रयास करने के क्रम में मिली नाकामयाबी हमें जीवन में यह सीख देती है कि जीवन जीने के रास्ते में आने वाली कठिनाइयां जीवन की बाधा नहीं हैं, बल्कि ये एक सीढ़ी बनकर आगे बढ़ने में सहायक भी बनती हैं और इससे खुद पर विश्वास करने और आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा मिलती है। इसलिए असफलता को नकारात्मक रूप में न लेकर सकारात्मक दृष्टि से देखना चाहिए, ताकि हम मुसीबत में रुकने के बजाय अपनी रणनीति को जरूरत के मुताबिक परिवर्तित कर सकें और उद्देश्य प्राप्ति के अपने मार्ग का निर्धारण कर सकें। यह भी याद रखने की जरूरत है कि सफलता उन्हीं का स्वागत करती है, जो गिरकर फिर से उठते हैं और चलते रहते हैं।

विपरीत परिस्थितियों का एक आम खमियाजा यह होता है कि हम खुद को कमजोर महसूस करने लगते हैं। जबकि सच यह है कि अगर हम असफलता के सामने हार नहीं मानें तो सफलता हमारी राह देखती है। हर असफलता के साथ हम सफलता के एक कदम और करीब आ जाते हैं। यह एक स्थापित सत्य है कि हम मेहनत करेंगे तो हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन यही कठिनाइयां हमें कामयाबी की उड़ान भरने के लिए पंख देती हैं। कहा भी कहा गया है कि हर असफलता यह साबित करती है कि हमने सफलता के लिए पूरे मन से प्रयास नहीं किया।

# जीवन का इंद्रधनुष

विजय गर्ग

अगर हम कुदरत के करिश्मे को गौर से देखें तो हैरानी होती है। हालांकि यह हैरानी हमारी समझने और खोज पाने की सीमा के कारण है। सच यह है कि सारा जगत ही इस हद तक विविधतापूर्ण है, जहां के बारे में हमें अंदाजा तक नहीं हो पाता। कुदरत से फितरत तक। संसार का कोई फूल हूबहू दूसरे फूल जैसा नहीं। नदी, पहाड़, झरना - कोई एक दूसरे जैसा नहीं है। कहीं-कहीं दिखने में समान होने का भ्रम भले हो। यानी हर कोई बेजोड़ ही है। फल मंडी में फल देखा जाए तो और भी अधिक हैरानी होती है। हर फल किसी न किसी पेड़ पर ही फलता और फूलता। मगर सब अलग-अलग रस और स्वाद के। एक ही बगीचे में एक- सीमाटी पर उगे दो अमरूद के पौधे भी जब फलदार वृक्ष बनते हैं तो उस पेड़ की शक्ल से लेकर उनके फल का जायका अलग-अलग हो सकता है।

इंसान भी इसी तरह है। आज तक दुनिया मे किसी की अंगुली के निशान यानी 'फिंगर प्रिंट' दूसरे से मिलता हुआ नहीं पाया गया है। एक ही घर के एक ही माता-पिता की संतानें गुण और आदत में कितनी भिन्न होती हैं। यह भी हैरानी की ही बात है। जो इस सच को महसूस कर लेता है, वह न तो नकलची बनता है, न घिसे-पिटे रास्ते पर चलता है। वह मौलिक बनता है। वही सचमुच में सार्थक जीवन जी रहा है, जो अपने अनोखे होने पर यकीन करता है।



ठीक इसी तरह अगर हम खुद के होने पर भरोसा करेंगे तो हमें अपनी खुशियों के लिए कभी भी किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा, क्योंकि तब हम खुद ही खुद को खुश रख पाएंगे और अपने आप में खुशी ढूंढ़ने से पहले हम जैसे हैं, वैसे ही स्वयं को स्वीकार करें। दूसरों को देखकर खुद से उम्मीद करने से कहीं बेहतर है खुद से शिकायत कम और अपने आप पर भरोसा ज्यादा किया जाए।

इससे संबंधित एक संदर्भ कथा है। एक व्यक्ति की मानसिकता का अंदाजा लगाने के लिए उससे पूछा गया कि 'विश्व में मनुष्यों के बीच बहुत तरह की असमानताएं हैं। कई तरह के भेदभाव हैं। उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है?' व्यक्ति ने उत्तर दिया कि 'ऐसा करने की आवश्यकता क्यों है? अगर हम पर्वतों को तोड़कर उन्हें समतल कर देंगे तो ऋतु चक्र प्रभावित होगा। उस इलाके के पर्यावरण पर असर होगा। कई तरह के जीव-जंतुओं का आश्रय समाप्त हो जाएगा। अनेक तरह की वनस्पतियां खत्म हो जाएंगी। फिर नदियां कैसे निकलेंगी? फिर मछलियां कैसे जीवित रहेंगी? विश्व इतना विशाल और विस्तृत है कि ये असमानताएं ही उसे पूर्णता प्रदान करती हैं। हालांकि यह एक पक्ष हो सकता है कि भिन्नता और विविधिता में संसार की खूबसूरती है, लेकिन इस तर्क पर मनुष्य के समाज में असमानता या विषमता को सही नहीं ठहराया जा सकता। कुदरत की विविधता को असमानता के रूप में नहीं देखा जा सकता। विविधता जहां सौंदर्य है, वहीं असमानता अन्याय का प्रतीक।

सच यह है कि कुदरत को हमेशा सरलता तथा ईमानदारी पसंद आती है। वह यही चाहती है कि हम जैसे हैं, खुद को स्वीकार करें। अपना विकास करें। किसी ने जीवन के अनुभवों से यही सब सीख कर कहा होगा कि सुनो सबकी, लेकिन करो अपने मन की। इसलिए अपनी तरफ से अपने मनपसंद क्षेत्र में काम करते हुए सौ फीसद मेहनत करनी चाहिए। इसके बाद उसका परिणाम कुदरत पर छोड़ देना चाहिए। जिस कुदरत ने अपनी इस विविधता को इस तरह सहेज रखा है, वही सबका खयाल रखती है। मेहनत से ज्यादा और समय से पहले कभी किसी को कुछ नहीं मिला है। जो भी परिपक्वता के बाद प्रकट होता है, वह शाश्वत रहता है। उसमें एक गरिमा होती है। महात्मा गांधी का सरोकार देश और यहां के लोगों को कहां लेकर आया। उन्होंने सत्याग्रह पर अनगिनत प्रयोग किए। वकालत को त्याग दिया। अंग्रेजों से लोहा लिया। एक शस्त्र न उठाया। मगर अंग्रेज उनसे कांपते थे। उसकी वजह थी उनकी स्थिरता और परिपक्वता। गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर कहते थे कि आप अपने कर्म करते हुए बस एक अच्छे और सच्चे इंसान बन जाओ। आगे की हर बात बहुत ही मनभावन तथा अच्छी होती जाएगी। अगर मन में कपट है तो फिर कुछ भी संतुलित नहीं रहेगा। चीजें पटरी से उतरती जाएंगी। जीवन का रंग खिलकर निखर न सकेगा।

अगर व्यक्ति के मन में स्वार्थ होगा, तो उसका प्रभाव उसके सार्वजनिक आचार-व्यवहार पर पड़ेगा। हो सकता है कि कुछ समय तक वह कुछ लोगों की नजर में अच्छा या लाभकारी साबित हो, लेकिन कुछ समय बाद उसके विचार और व्यवहार जमीनी स्तर पर ऐसे प्रभाव पैदा करने लगते हैं कि उससे किसी को नुकसान भी हो सकता है। इसी वजह से धीरे-धीरे लोग उससे दूर होने लगते हैं। स्वार्थी व्यक्ति किसी के लिए न उपयोगी बन पाते हैं और न जीवन में उन्हें अच्छे अवसर मिलते हैं। सवाल है कि स्वार्थ की छिपी मंशा को कब तक छिपाया जा सकता। एक न एक दिन लोग उसे पहचानने ही लगते हैं और ऐसे लोगों से कटना शुरू कर देते हैं। स्वार्थ के परिणाम अंतिम तौर पर ऐसे ही निकलते हैं।

यह भी सच है कि जगत में चीजें हमेशा बदलती हैं। जो कल था, वह आज नहीं है और जो आज है, वह कल नहीं रहेगा। मगर हम उम्मीद करें कि जीवन और जगत को देखने का हमारा नजरिया हमेशा मानवीय तथा लोक कल्याणकारी रहे। इससे हमारे आसपास के लोगों का परिदृश्य भी बदलेगा और वह बदलाव बेहतरी के लिए ही होगा।

# किसानों के लिए खुशखबरी, फसल बीमा मिलने में हुई देर तो मिलेगा 12 फीसदी ब्याज

परिवहन विशेष न्यूज

**अभी तक क्रॉप कटिंग के दौरान स्थल निरीक्षण कर नुकसान का आकलन होता था। किंतु अब केंद्र सरकार ने निर्णय लिया है कि क्षति का आकलन सैटेलाइट बेस्ड सिस्टम से किया जाएगा। फसल बीमा योजना के तहत अभी तक एक लाख 70 हजार करोड़ रुपये से अधिक के दावों का भुगतान किया जा चुका है। फसल बीमा योजना केंद्र एवं राज्य सरकारें मिलकर संचालित करती हैं।**

**नई दिल्ली।** बाढ़-सुखाड़ या अन्य किसी प्राकृतिक आपदा और मौसमी घटनाओं के चलते किसानों की फसलों के नुकसान का सही एवं सटीक आकलन की व्यवस्था की जा रही है। इसके लिए रिमोट सेंसिंग का सहारा लिया जाएगा। किसानों को यदि बीमा कंपनियां क्षतिपूर्ति देने में विलंब करेंगी, तो उन्हें प्रतिवर्ष 12 प्रतिशत ब्याज के साथ पैसे देने होंगे।

अभी तक क्रॉप कटिंग के दौरान स्थल निरीक्षण कर नुकसान का आकलन होता था। किंतु अब केंद्र सरकार ने निर्णय लिया है कि क्षति का आकलन सैटेलाइट बेस्ड सिस्टम से किया जाएगा। रिमोट सेंसिंग ऐसी तकनीक है, जिसमें किसी वस्तु के बारे में जानकारी लेने के लिए साइट विजिट की आवश्यकता नहीं होती है। सैटेलाइट के माध्यम से वस्तु की वास्तविक स्थिति की जानकारी मिल जाती है।

**कब हुई थी फसल बीमा की शुरुआत**

किसानों की फसलों के नुकसान की भरपाई के लिए केंद्र सरकार ने 2016 में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की शुरुआत की थी। इसके तहत अभी तक एक लाख 70 हजार करोड़ रुपये से अधिक के दावों का भुगतान किया जा चुका है। फसल बीमा योजना केंद्र एवं राज्य सरकारें मिलकर संचालित करती हैं। किंतु कई राज्यों से बीमा भुगतान के दावों के समाधान में देरी की शिकायतें आ रही थी। कारण कई थे।

कुछ राज्य अपने हिस्से का प्रीमियम अनुदान देने में देर कर रहे थे। उपज के ब्योरे देने में भी झोल देखा जा रहा था। इसी तरह बीमा कंपनियां एवं राज्यों के बीच मतभेद, पात्र किसानों के खातों में क्षतिपूर्ति राशि को अंतरित करने के लिए खाता विवरण नहीं मिलना, राष्ट्रीय फसल बीमा पोर्टल पर व्यक्तिगत रूप से किसानों के आंकड़ों की गलत या अपूर्ण प्रविष्टि, किसानों के प्रीमियम को भेजने में देरी के साथ-साथ संबंधित बीमा कंपनी को किसानों के प्रीमियम के हिस्से को नहीं भेजना आदि शामिल थे।

**अब समय पर निपटाया जा सकेगा दावा**

ऐसे तमाम कारणों के चलते अधिकांश लंबित दावों का निपटारा समय पर नहीं हो पा रहा था। केंद्र ने इसका संज्ञान लिया और अपना प्रीमियम राज्यों से अलग कर लिया, ताकि बीमा राशि समय पर जारी किया जा सके। साथ ही बीमा कंपनियों पर भी नकेल कसी गई। राज्य सरकारों की ओर से फसल नुकसान का अंतिम ब्योरा प्राप्त होने की तारीख से तीस दिनों के भीतर क्षतिपूर्ति का भुगतान करना अनिवार्य कर दिया गया। तय अवधि से आगे बढ़ने पर कंपनियों को प्रतिवर्ष 12 प्रतिशत ब्याज की दर से राशि का भुगतान करना होगा।

किसान का प्रीमियम हिस्सा खरीफ फसलों के लिए दो प्रतिशत, रबी के लिए 1.5 प्रतिशत, वाणिज्यिक और बागवानी फसलों के लिए पांच प्रतिशत तक सीमित है। केंद्र सरकार ने खरीफ 2023 में शुरू की गई डिजीक्लेम प्लेटफार्म पर राष्ट्रीय फसल बीमा पोर्टल के माध्यम से किसानों को सीधे भुगतान हस्तांतरित करके दावों में पारदर्शिता लाने का भी प्रबंध किया है।

शिकायतों के निपटारे के लिए कृषि रक्षक पोर्टल और एक समर्पित टोल-फ्री हेल्पलाइन (14447) नंबर भी जारी किया गया है। इसकी मदद से किसान अपनी बीमा संबंधी शिकायतों को ट्रैक कर सकते हैं और एक तय समय सीमा के भीतर समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

# पांच दिन इस सप्ताह 1844 अंक गिरा सेंसेक्स, निवेशकों के 12 लाख करोड़ रुपये खाक

परिवहन विशेष न्यूज

**घरेलू बाजारों में बीते तीन सत्रों से जारी गिरावट से निवेशकों की संपत्ति में 12.07 लाख करोड़ रुपये की कमी आई है। इस गिरावट के बाद बीएसई में सूचीबद्ध सभी कंपनियों का बाजार पूंजीकरण घटकर 429.67 लाख करोड़ रुपये या पांच ट्रिलियन डॉलर रह गया है। अमेरिकी मुद्रा और विदेशी फंड हाउस द्वारा पैसा निकाले जाने के दबाव को सहन करने में शुक्रवार को रुपया नाकाम रहा।**

**नई दिल्ली।** घरेलू शेयर बाजार में छह से 10 जनवरी के दौरान घरेलू साप्ताहिक आधार पर दो प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट रही है। इस सप्ताह बीएसई का मानक सूचकांक सेंसेक्स 1,844.2 अंक लुढ़का है। इसी तरह, एनएसई के निफ्टी में 573.25 अंक की कमी आई है। कारोबारी सप्ताह के अंतिम दिन भी सेंसेक्स लगातार तीसरे दिन 241.30 अंक गिरकर 77,378.91 के स्तर पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स में 820 अंक तक की गिरावट दर्ज की गई। वहीं, निफ्टी 95 अंक की गिरावट के साथ 23,431.50 अंक पर बंद हुआ।

घरेलू बाजारों में बीते तीन सत्रों से जारी गिरावट से निवेशकों की संपत्ति में 12.07 लाख करोड़ रुपये की कमी आई है। इस गिरावट के बाद बीएसई में सूचीबद्ध सभी कंपनियों का बाजार पूंजीकरण घटकर 429.67 लाख करोड़ रुपये या पांच ट्रिलियन डॉलर रह गया है।

जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर का कहना है कि आपूर्ति संबंधी चिंताओं के कारण कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों और डॉलर इंडेक्स में मजबूती के कारण घरेलू बाजार की धारणा सुस्त रही है। तीसरी तिमाही के नतीजों की सकारात्मक शुरुआत के बाद आईटी सेक्टर के लचीलेपन के बावजूद डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों और उच्च मूल्यांकन के कारण व्यापक सूचकांकों में गिरावट आई है। बाजारों में निकट भविष्य में गिरावट जारी रह सकती है।

**डॉलर के मुकाबले और कमजोर हुआ रुपया**

अमेरिकी मुद्रा और विदेशी फंड हाउस द्वारा पैसा निकाले जाने के दबाव को सहन करने में शुक्रवार को रुपया नाकाम रहा और पहली बार 14 पैसे गिरकर अब तक के सर्वकालिक निचले स्तर 86.00 पर पहुंच गया। विदेशी मुद्रा व्यापारियों ने कहा कि विदेश में कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों और घरेलू इक्विटी बाजारों में नकारात्मक धारणा ने भी भारतीय मुद्रा को कमजोर किया।

इतना ही नहीं, 20 जनवरी को डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति के तौर पर कार्यभार संभालने के बाद नए अमेरिकी प्रशासन द्वारा उठाए जाने वाले प्रतिबंधात्मक व्यापार उपायों की आशंका के बीच डॉलर की मांग बढ़ने से भी अमेरिकी मुद्रा मजबूत हुई। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में रुपया 85.88 पर खुला और दिन के सर्वकालिक उच्चस्तर 85.85 को छूने के बाद डॉलर के मुकाबले अब तक के सबसे निचले स्तर 86.00 पर बंद हुआ। गुरुवार को रुपया डालर के मुकाबले पांच पैसे बढ़कर 85.86 पर बंद हुआ, जो पिछले सत्र में 17 पैसे की भारी गिरावट से उबरा था।

मिराए एसेट शेयरखान के रिसर्च एनालिस्ट अनुज चौधरी ने कहा कि घरेलू बाजारों में गिरावट जारी रहने और एफआइआइ की निकासी जारी रहने से रुपया रिकार्ड निचले स्तर पर पहुंच गया। उन्होंने कहा, 'घरेलू बाजारों में कमजोरी, मजबूत डालर और लगातार एफआइआइ की निकासी से रुपये पर दबाव जारी रह सकता है। कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के साथ-साथ अमेरिकी यील्ड में उछाल से घरेलू इकाई पर और दबाव पड़ सकता है।'

हालांकि विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि आरबीआइ का कोई भी हस्तक्षेप निचले स्तरों पर रुपये को सहारा दे सकता है। इस बीच, छह मुद्राओं की बास्केट के मुकाबले डालर की ताकत को मापने वाला डॉलर इंडेक्स 0.01 प्रतिशत बढ़कर 109.01 पर कारोबार कर रहा था।

# इकोनॉमी के लिए गुड न्यूज, 6 महीने के उच्चतम स्तर पर पहुंचा औद्योगिक उत्पादन

**गत नवंबर में औद्योगिक उत्पादन के कुल प्रदर्शन के साथ मैन्युफैक्चरिंग का प्रदर्शन भी बेहतर रहा। मैन्युफैक्चरिंग में 5.8 प्रतिशत तो कैपिटल गुड्स में नौ प्रतिशत का इजाफा रहा। मैन्युफैक्चरिंग और कैपिटल गुड्स में बढ़ोतरी अर्थव्यवस्था के लिए अच्छे संकेत है क्योंकि मैन्युफैक्चरिंग बढ़ने से रोजगार निकलते हैं। कैपिटल गुड्स के बढ़ने का मतलब है कि आने वाले समय में औद्योगिक उत्पादन में विस्तार की तैयारी हो रही है।**

**नई दिल्ली।** गत नवंबर माह के औद्योगिक उत्पादन में वर्ष 2023 के नवंबर के मुकाबले 5.2 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई जो पिछले छह माह में सबसे अधिक है। जानकारों का कहना है कि त्योहारी सीजन की वजह से औद्योगिक उत्पादन में यह बढ़ोतरी दर्ज की गई। पिछले साल अक्टूबर में औद्योगिक उत्पादन में 3.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी।

गत नवंबर में औद्योगिक उत्पादन के कुल प्रदर्शन के साथ मैन्युफैक्चरिंग का प्रदर्शन भी बेहतर रहा। नवंबर में मैन्युफैक्चरिंग में 5.8 प्रतिशत तो कैपिटल गुड्स में नौ प्रतिशत का इजाफा रहा। मैन्युफैक्चरिंग और कैपिटल गुड्स में बढ़ोतरी अर्थव्यवस्था के लिए अच्छे संकेत है क्योंकि मैन्युफैक्चरिंग बढ़ने से रोजगार निकलते हैं और कैपिटल गुड्स के बढ़ने का मतलब होता है कि आने वाले समय में औद्योगिक उत्पादन में विस्तार की तैयारी हो रही है।

**मैन्युफैक्चरिंग में बड़ा उछाल**

पिछले अक्टूबर में मैन्युफैक्चरिंग में 4.4 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी। गत नवंबर में इंफ्रास्ट्रक्चर एवं कंस्ट्रक्शन में 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी रही और इस सेक्टर में बढ़ोतरी से भी रोजगार के सृजन में मदद मिलती है।

उद्योग विभाग के आंकड़ों के मुताबिक गत नवंबर में खनन उत्पादन का प्रदर्शन बेहतर नहीं रहा और इस सेक्टर में सिर्फ 1.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी रही। बिजली के उत्पादन में 4.4 प्रतिशत, प्राइमरी गुड्स में 2.7 प्रतिशत, इंटरमीडिएट गुड्स में पांच प्रतिशत, कंज्यूमर ड्यूरेबल में 13.1 प्रतिशत तो कंज्यूमर नॉन-ड्यूरेबल में 0.6 प्रतिशत का इजाफा रहा।

# 90 घंटे वाली बहस में कूदे राजीव बजाज, बोले- काम की गुणवत्ता मायने रखती है, समय नहीं

परिवहन विशेष न्यूज

**लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) के चेयरपर्सन एस एन सुब्रमणियन ने हफ्ते में 90 घंटे काम वाली बात कहकर देश में एक नई बहस छेड़ दी है। वहीं अब इस मामले में बजाज ऑटो के प्रबंध निदेशक राजीव बजाज भी कूद पड़े हैं। उन्होंने इस मुद्दे पर अपनी राय रखते हुए कहा कि काम की गुणवत्ता घंटों से कहीं अधिक मायने रखती है।**

**नई दिल्ली।** लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) के चेयरपर्सन एस एन सुब्रमणियन ने हफ्ते में 90 घंटे काम वाली बात कहकर देश में एक नई बहस छेड़ दी है। वहीं, अब इस मामले में बजाज ऑटो के प्रबंध निदेशक राजीव बजाज भी कूद पड़े हैं। उन्होंने इस मुद्दे पर अपनी राय रखते हुए कहा कि काम की गुणवत्ता घंटों से कहीं अधिक मायने रखती है।

**काम के घंटों की संख्या मायने नहीं रखती- राजीव**

सीएनबीसी टीवी18 की रिपोर्ट के मुताबिक, राजीव बजाज ने कहा कि अगर कोई 90 घंटे काम करने की शुरुआत करना चाहता है तो इसकी शुरुआत ऊपर से करनी चाहिए। काम के घंटों की संख्या मायने नहीं रखती, काम की गुणवत्ता मायने रखती है। हमें पहले से कहीं अधिक दयालु, सौम्य दुनिया की जरूरत है।

बजाज ने यह भी कहा कि कंपनियों को काम के घंटों की निश्चित संख्या जैसी प्रतिगामी नीतियों को अपनाने से बचना चाहिए। उन्होंने कार्य-जीवन संतुलन के महत्व के बारे में भी बात की। उन्होंने यहां तक कहा कि अगर कोई सप्ताह में 70 या 90 घंटे भी काम करता है तो इसका असर परिवार, स्वास्थ्य पर पड़ेगा और इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।

**एलएंडटी चेयरमैन ने क्या कहा था?**

सुब्रह्मण्यन ने सोशल मीडिया पर वायरल हुए कर्मचारियों को दिए गए एक वीडियो संदेश में कहा, ₹आप घर पर बैठकर क्या करते हैं? आप अपनी पत्नी को कितनी देर तक घूर सकते हैं? पत्नियां अपने पतियों को कितनी देर तक घूर सकती हैं? आप ऑफिस जाएं और अपना काम करना शुरू करें₹। दरअसल, कर्मचारियों चेयरमैन से सवाल कर रहे थे कि उन्हें सप्ताह में सिर्फ एक दिन की छुट्टी क्यों मिलती है, दो दिन की क्यों नहीं।

एलएंडटी के चेयरमैन ने कहा, ₹ईमानदारी से कहूं तो मुझे इस बात का दुख है कि मैं आपसे रविवार को काम नहीं करवा पा रहा हूं। अगर मैं आपसे रविवार को भी काम ले पाऊं, तो मुझे



बेहद खुशी होगी, क्योंकि मैं खुद भी रविवार को काम करता हूं।

**हर्ष गोयनका ने क्या कहा?**

आरपीजी ग्रुप के चेयरपर्सन हर्ष गोयनका ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करके एलएंडटी चेयरमैन के बयान की आलोचना की। उन्होंने कहा, ₹एक हफ्ते में 90 घंटे काम? रविवार को 'सन-ड्यूटी' क्यों न कहा जाए और 'छुट्टी' को एक मिथकीय अवधारणा क्यों न बना दिया जाए! मैं कड़ी मेहनत और समझदारी से काम करना चाहता हूँ, लेकिन जीवन को एक निरंतर कार्यालय शिफ्ट में बदल देना? यह सफलता नहीं, बल्कि बर्नआउट का नुस्खा है। वर्क लाइफ बैलेंस वैकल्पिक नहीं है, यह जरूरी है। खैर, यह मेरा विचार है! #WorkSmartNotSlave"

# टाटा ग्रुप में कैसे बदल रही लीडरशिप; किसे मिली जिम्मेदारी, कौन हुआ बाहर?

**नोएल टाटा के टाटा ट्रस्ट का चेयरपर्सन बनने के साथ ही उनकी तीन संतानें भी ग्रुप के कामकाज में अपनी भूमिका निभाने लगी हैं। हाल ही में नोएल टाटा की दोनों बेटियों लीह और माया को सर रतन टाटा इंडस्ट्रियल इंस्टीट्यूट (SRTII) के बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज में शामिल किया गया है। यह कदम 104.5 अरब डॉलर टाटा ग्रुप के नेतृत्व की नई पीढ़ी के बारे में महत्वपूर्ण संकेत देता है।**

**नई दिल्ली।** देश के सबसे प्रतिष्ठित कारोबारी घरानों में से एक टाटा ग्रुप बड़े बदलाव के दौर से गुजर रहा है। अब 104.5 अरब डॉलर के टाटा ग्रुप की कमान धीरे-धीरे नई पीढ़ी के हाथों में जा रही है। इस बदलाव की शुरुआत रतन टाटा की देहांत के बाद हुई। रतन टाटा की जगह उनके सौतेले भाई नोएल नवल टाटा ने अक्टूबर 2024 में टाटा ट्रस्ट के चेयरपर्सन की जिम्मेदारी संभाली। इसके पास टाटा संस में 66 फीसदी का कंट्रोलिंग स्टेक है, जो टाटा ग्रुप की होल्डिंग और प्रमोटर कंपनी है।

**टाटा की लीडरशिप में बदलाव**

नोएल टाटा के टाटा ट्रस्ट का चेयरपर्सन बनने के साथ ही उनकी संतानें भी ग्रुप के कामकाज में अपनी भूमिका निभाने लगी हैं। नोएल टाटा की तीन संतान हैं, दो बेटियां लीह और माया। साथ ही एक भी बेटा भी है, नेविल। नोएल टाटा की बेटियों, लीह और माया को सर रतन टाटा इंडस्ट्रियल इंस्टीट्यूट (SRTII) के बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज में शामिल किया गया है। यह कदम टाटा ग्रुप के भविष्य और नेतृत्व की नई पीढ़ी के बारे में महत्वपूर्ण संकेत देता है।

माया और लेआ टाटा ने आर्नाज कोटवाल और फ्रेडी तलाती की जगह ली है, जिन्होंने SRTII के ट्रस्टी के तौर पर इस्तीफा दे दिया था। अब, नोएल टाटा के बच्चे टाटा ग्रुप के छोटे ट्रस्ट्स के बोर्ड में शामिल हैं। हालांकि उन्हें सर रतन टाटा ट्रस्ट और दोराबजी टाटा ट्रस्ट जैसे प्रमुख ट्रस्ट में अभी तक शामिल नहीं किया गया है।

**SRTII में बदलाव की क्या वजह है?**

SRTII के ट्रस्टी बोर्ड में बदलाव की वजह भी खास है। दरअसल, सर रतन टाटा ट्रस्ट के ट्रस्टी चाहते थे कि SRTII को दोबारा सक्रिय करके आगे बढ़ाया जाए। इसके लिए वे ट्रस्टी के तौर पर ऐसे लोगों को शामिल करना चाहते थे, जो SRTII से करीब से जुड़े हों और नियमित रूप से मुंबई में उपलब्ध भी हों। माया और लेआ टाटा इन दोनों जरूरतों को पूरा करती हैं। इसलिए वे ट्रस्टी बनने के लिए पहले से ही आदर्श उम्मीदवार थीं।

सर रतन टाटा ट्रस्ट के बोर्ड का मानना माया और लेआ को ट्रस्टी के रूप में नामांकित करना काफी बेहतर फैसला है। इससे संस्था की जरूरतों और भविष्य की योजनाओं पर बारीकी से अमल किया जा सकेगा। यह फैसला SRTII को बेहतर दिशा और मैनेजमेंट देगा।

**बदलाव पर विवाद भी**

टाटा ग्रुप में यह बदलाव पारिवारिक उत्तराधिकार का हिस्सा था, लेकिन इससे आंतरिक स्तर पर कुछ नाराजगी भी पैदा हुई। आर्नाज कोटवाल ने बोर्ड के अन्य ट्रस्टीज को पत्र लिखकर कहा कि उन्हें जिस तरह से इस्तीफा देने के लिए कहा गया, वह तरीका ठीक नहीं था। उनका कहना था कि यह बदलाव उचित संवाद के जरिए नहीं है, जिससे उन्हें परेशानी हुई।

हालांकि, बोर्ड का कहना है कि SRTII के लिए बदलाव और विकास की जो योजना बनाई गई है, उसमें पुराने ट्रस्टी फिट नहीं बैठते। इसलिए माया और लीह को नामांकित किया गया है। वे दोनों मुंबई में ही रहती हैं, इसलिए वे SRTII से जुड़ी योजनाओं में बेहतर तरीके से हिस्सा ले सकेंगी।

**टाटा ग्रुप के उत्तराधिकारी**

नोएल टाटा की तीन संतानें हैं, जो धीरे-धीरे टाटा ग्रुप की कमान संभाल रहे हैं। इनके पास पहले से ही टाटा ग्रुप से जुड़ी कुछ बड़ी जिम्मेदारियां हैं। पिछले साल रतन टाटा के देहांत से पहले वे ग्रुप के कुछ महत्वपूर्ण ट्रस्ट में शामिल हो चुके थे।

**लीह टाटा**

नोएल टाटा की तीन संतानों में लीह सबसे बड़ी हैं। लीह इंडियन होटल्स कंपनी की वाइस प्रेसिडेंट हैं। वह गेटवे होटल्स ब्रांड संभालती हैं। उन्होंने मुंबई में ताज महल पैलेस होटल का मैनेजमेंट किया और 2006 में ताज होटल्स रिसॉर्ट्स एंड पैलेस में सहायक बिक्री प्रबंधक के रूप में अपना करियर शुरू किया। लीह टाटा सोशल वेलफेयर ट्रस्ट, टाटा एजुकेशन ट्रस्ट और जेआरडी और थेल्मा जे टाटा ट्रस्ट के बोर्ड में भी शामिल हैं।

**माया टाटा**

नोएल टाटा की संतानों में माया दूसरे नंबर पर हैं। माया टाटा ने अपने करियर की शुरुआत टाटा अपॉर्चुनिटीज फंड से की थी। यह टाटा कैपिटल का प्रमुख प्राइवेट इक्विटी फंड है। वह जल्द ही टाटा डिजिटल में चली गईं और टाटा न्यू ऐप के लॉन्च में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। माया टाटा एजुकेशन ट्रस्ट, आरडी टाटा ट्रस्ट और जेआरडी और थेल्मा जे टाटा ट्रस्ट के बोर्ड में शामिल हैं।

**नेविल टाटा**

नेविल टाटा नोएल टाटा की सबसे छोटी संतान है। नेविल ने पिछले साल ट्रेंट की हाइपरमार्केट इकाई, स्टार बाजार के प्रमुख के रूप में कार्यभार संभाला। इससे पहले उन्होंने जूडियो को संभाला, जिसे एक सफल कंपनी माना जाता है। वह अब देश के सबसे बड़े अपैरल ब्रांड में से एक है। यह टाटा ग्रुप का रिटेल बिजनेस है। वह टाटा सोशल वेलफेयर ट्रस्ट, जेआरडी टाटा ट्रस्ट और आरडी टाटा ट्रस्ट के बोर्ड में हैं।

# जीएसटी पोर्टल हुआ ठप, टैक्सपेयर्स परेशान; क्या डेडलाइन बढ़ाएगी सरकार

परिवहन विशेष न्यूज

**टैक्सपेयर्स के मुताबिक पिछले कई घंटों से वे जीएसटी भरने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन फाइल अपडेट नहीं हो पा रही है। इससे बहुत-से व्यापारियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। खासकर उन व्यापारियों को जो आखिरी दिन अपना रिटर्न दाखिल करने की योजना बना रहे थे। पोर्टल के डाउन होने के बाद से टैक्सपेयर्स डेडलाइन बढ़ाने की मांग कर रहे हैं।**

**नई दिल्ली।** जीएसटी के लिए मासिक और त्रैमासिक रिटर्न दाखिल करने की डेडलाइन शनिवार, 11 जनवरी 2025 है। लेकिन, इससे ठीक एक दिन पहले जीएसटी पोर्टल ठप पड़ गया। यह पोर्टल पिछले 24 घंटे से अधिक समय से काम नहीं कर रहा है। इससे देशभर के टैक्सपेयर्स चिंतित हैं। कई व्यापारी सारी तैयारी के बावजूद रिटर्न फाइल नहीं कर पा रहे हैं। व्यापारियों ने मौजूदा तकनीकी समस्या को देखते हुए डेडलाइन बढ़ाने की भी मांग की है।

**GSTN ने तकनीकी खराबी पर क्या कहा?**

जीएसटीएन के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल ने इस समस्या पर प्रतिक्रिया आई है। इसमें कहा गया है, 'कुछ यूजर्स को अपने जीएसटीआर-1 समरी तैयार करने और फाइल करने में दिक्कत हो रही है। उन्होंने यह भी बताया कि उनकी तकनीकी टीम इस समस्या के समाधान के लिए तेजी से काम कर रही है।' एक अन्य अपडेट में जीएसटी पोर्टल के शुक्रवार दोपहर 12 बजे तक ठीक होने की बात कही गई थी। हालांकि, शाम 4.15 तक भी साइट नहीं खुल रही थी। अब साइट ठीक होने के समय को बढ़ाकर शाम 6 बजे कर दिया गया है।

साइट पर लॉगिन करने पर मैसेज आ रहा है, 'शेड्यूल्ड डाउनटाइम! हम साइट पर सेवाओं को बेहतर बना रहे हैं। 10 जनवरी 2025 को सुबह 12:00 बजे से 10 जनवरी 2025 को शाम 6:00 बजे तक सेवाएं उपलब्ध नहीं होंगी। किसी भी सवाल के मामले लिए कृपया हमें 1800-103-4786 पर कॉल करें। हम आपके सहयोग की सराहना करते हैं।'

**जीएसटी पोर्टल काफी देर से है ठप**

टैक्सपेयर्स के मुताबिक, पिछले कई घंटों से वे जीएसटी भरने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन फाइल अपडेट नहीं हो पा रही है। इससे बहुत-से व्यापारियों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। खासकर, उन व्यापारियों को जो आखिरी दिन अपना रिटर्न दाखिल करने की योजना बना रहे थे। पोर्टल के डाउन होने के बाद से टैक्सपेयर्स डेडलाइन बढ़ाने की मांग कर रहे हैं।

टैक्सपेयर्स का कहना है कि यह तकनीकी समस्या जीएसटी पोर्टल की तरफ से हुई है, इसलिए उन्हें रिटर्न फाइल करने के लिए अतिरिक्त मोहलत मिले।

# हेमन्त सोरेन एवं केंद्रीय कोयला मंत्री किशन रेड्डी की कोयले खनन पर महत्वपूर्ण बैठक

# 1 लाख 36 हजार वकाया भूगतान की मांग को मुख्यमंत्री ने पुनः दोहराया

सी एस आर, युरेनियम उत्खनन से जन स्वस्थ को खतरा समेत पर्यावरण पर चर्चा

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड**

**रांची,** जिस राज्य देश को 29% कोयला तथा 40% प्रतिशत खनिज के हिस्सेदारी का योगदान देता उसी प्रदेश के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के साथ केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी किशन रेड्डी की उपस्थिति में राज्य सरकार के वरीय पदाधिकारियों तथा कोयला मंत्रालय और कोल इंडिया और इसकी अनुषंगी इकाइयों के अधिकारियों बीच कोयला खनन से जुड़े विभिन्न विषयों तथा उसके समाधान को लेकर उच्च स्तरीय बैठक हुई। मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में हुई बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि कोयला एक ऐसा विषय है, जिसके तहत इसके खनन, उत्पादन, परिवहन, जमीन अधिग्रहण मुआवजा, विस्थापन के साथ डीएमएफटी फंड एवं सीएसआर एक्टिविटीज को बेहतर तरीके से संचालित करने के लिए केंद्र और राज्य सरकार को मिलकर आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। इससे कोल माइनिंग से संबंधित समस्याओं का जहां समाधान निकलेगा वहीं लोगों के बीच माइनिंग को लेकर जो नकारात्मक मानसिकता बनती है उसे बदलने में भी सहूलियत होगी। इससे लोगों की उम्मीदें भी जागेगी और कोल परियोजनाओं को लेकर जो समस्याएं उत्पन्न होती है, उसको काफी हद तक रोका जा सकता है।

बैठक में मुख्यमंत्री हेमंत ने खनिज रॉयल्टी के 1 लाख 36 हज़ार करोड़ के बकाया भुगतान की मांग रखी। इस बैठक में खनिज रॉयल्टी को लेकर राज्य सरकार ने विषयवार/क्षेत्रवार अलग-अलग परियोजनावार बकाया राशि का आकलन, जो जिला स्तर पर खनन कंपनियां के साथ तैयार किया गया है, केंद्रीय कोयला मंत्री के समक्ष उसे रखा गया तथा उस बकाये तथा गणना का आधार उपलब्ध कराया गया। जिस पर केंद्रीय कोयला मंत्री ने आदेश दिया कि केंद्र सरकार के अधिकारी राज्य सरकार के साथ मिलकर इसकी प्रमाणिकता का आकलन करें। केंद्रीय कोयला मंत्री ने मुख्यमंत्री को बकाया के भुगतान का भरोसा दिलाया।

विस्थापित होने वाले रैयतों को स्टेक होल्डर बनाने पर दिया जोर दिया।मुख्यमंत्री ने कहा कि कोल खनन परियोजनाओं को लेकर जमीन का जो अधिग्रहण होता है। जो रैयत विस्थापित होते हैं, उन्हें सिर्फ मुआवजा और नौकरी देने की व्यवस्था से हमें आगे बढ़ाने की जरूरत है। विस्थापित रैयतों को खनन परियोजनाओं में स्टेक होल्डर बनाकर हमें आगे बढ़ने की जरूरत है। इससे उनका हम विश्वास भी जीतेंगे और सीएसआर से जुड़ी गतिविधियों तथा डीएमएफटी फंड का बेहतर तरीके से इस्तेमाल भी कर सकेंगे। मुख्यमंत्री ने खनन परियोजनाओं में कार्य को लेकर जो टेंडर जारी किए जाते हैं। उसमें छोटे-मोटे कार्यों का टेंडर विस्थापितों को मिलना चाहिए। इस दिशा में कोल मंत्रालय दिशा निर्देश जारी करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड जैसे राज्य में जमीन से लोगों का भावनात्मक लगाव होता है। ऐसे में जब खनन परियोजनाओं को लेकर जमीन अधिग्रहण होता है तो लोगों को काफी तकलीफें होती है। वे अपनी जमीन से अलग होना नहीं चाहते हैं। विस्थापितों को सिर्फ मुआवजा तथा नौकरी देकर सारी खुशियां नहीं दे सकते हैं। ऐसे में जमीन अधिग्रहण से जो रैयत विस्थापित होते हैं उनकी कोल खनन परियोजनाओं में इस तरह भागीदारी सुनिश्चित

किया जाना चाहिए, ताकि वे अपना पूरा सहयोग सरकार और कोयला कंपनियों को दे सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में ऐसी कई कोल परियोजनाएं हैं, जहां खनन का कार्य पूरा हो चुका है और कोल कंपनियों के द्वारा उस जमीन को यूं ही छोड़ दिया गया है। वह जमीन ना तो राज्य सरकार को हस्तांतरित की जा रही है और ना ही उसका कोई सदुपयोग हो रहा है। इस वजह से बंद हो चुकी कोल खनन परियोजनाओं में अवैध माइनिंग हो रही है, जिस वजह से कई घटनाएं भी हो चुकी हैं। ऐसे में पड़े खदानों की जमीन राज्य सरकार को वापस किया जाय।

मुख्यमंत्री ने बैठक में कोल कंपनियों के द्वारा कोयला खनन क्षेत्र में चल रहे सीएसआर एक्टिविटीज और डीएमएफटी फंड के इस्तेमाल की जानकारी ली। कोयला मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि वर्तमान में कोल कंपनियों के द्वारा कोल खनन क्षेत्र के 20 किलोमीटर के दायरे में आने वाले गांव या इलाके में सीएसआर एक्टिविटी संचालित की जाती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सीएसआर एक्टिविटीज का दायरा और बढ़ना चाहिए। कोयला खनन परियोजनाओं के कम से कम 50 किलोमीटर के रेडियस में सीएसआर एक्टिविटीज के तहत क्षेत्र के विकास से जुड़ी योजनाओं को लागू किया जाए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक इसका फायदा पहुंच सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि खनिजों का जिस तरह से खनन हो रहा है उससे पर्यावरण को काफी नुकसान पहुंच रहा है। इस दिशा में गंभीरता से सोच कर कदम उठाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि झरिया में जमीन के नीचे वर्षों से आग लगी हुई है लेकिन उस पर अभी तक नियंत्रण नहीं पाया जा सका है। वही घाटशिला- में जादूगोड़ा में यूरेनियम के खनन की वजह से लोगों के समक्ष स्वास्थ्य से जुड़ी कई गंभीर समस्याएं आ रही है। इसका निदान होना चाहिए। कोयला मंत्री ने मुख्यमंत्री को भरोसा दिलाया कि कोयला खदानों के नीचे लगी आग को बुझाने और खनन से होने वाले स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के मामले में केंद्र सरकार आवश्यक कदम उठाएगी

कोल कंपनियां यहां स्थायी प्रशिक्षण केंद्र खोलने की पहल करे। इन प्रशिक्षण केंद्र में विस्थापित परिवारों के युवाओं को वैसे मशीनों के संचालन का प्रशिक्षण दिया जाए जिसका इस्तेमाल कोयला खनन में किया जाता है। इससे कोल परियोजनाओं में उनकी भागीदारी बढ़ेगी और बाहर से श्रमिकों को लाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

कोल कंपनियां माइनिंग कार्यों में भी महिलाओं की सहभागिता को बढ़ाने की दिशा में कदम बढ़ाए।जो कोल ब्लॉक निजी कंपनियों को आवंटित किए गए हैं, उनमें स्थानीय युवाओं को रोजगार देने की व्यवस्था होनी चाहिए।झारखंड में मीनिंग टूरिज्म को बढ़ावा देने की दिशा में भी कोयला मंत्रालय इनिशिएटिव ले।

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय कोयला मंत्री से कोल इंडिया का मुख्यालय झारखंड में लाने का एक बार फिर आग्रह किया। जिसका अथक प्रयास उनके पिता शिबू सोरेन भी कर चुके हैं।

इस उच्च स्तरीय बैठक में राज्य की मुख्य सचिव श्रीमती अलका तिवारी, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, केंद्रीय कोयला सचिव विक्रम देव, एडिशनल सेक्रेटरी श्रीमती विस्मिता तेज, राज्य सरकार में सचिव अबू बकर सिद्दीक, प्रशांत कुमार, चंद्रशेखर, जितेंद्र सिंह, उमाशंकर सिंह, निदेशक खनन राहुल कुमार सिन्हा, प्रमंडलीय आयुक्त अंजनी कुमार मिश्रा, कोल इंडिया के अध्यक्ष पीएम प्रसाद, सीसीएल के सीएमडी निलेन्दु कुमार सिंह, बीसीसीएल के सीएमडी एस दत्ता, ईसीएल के सीएमडी सतीश झा, सीएमपीडीआई के सीएमडी मनोज कुमार कल के सीएमडी एवं हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड के सीएमडी घनश्याम शर्मा समेत कई अन्य अधिकारी मौजूद थे।

## विश्व हिंदी दिवस 2025 हर साल दुनियाभर में 10 जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। सिर्फ भारत ही नहीं अन्य कई देशों में जश्न में के साथ मनाया जाता है : डॉ हृदयेश कुमार

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार ने दुबई की Beriot watt University में विश्व हिंदी दिवस पर विशेष रूप से वार्ता कर बताया कि हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा है। भारत और उसके आसपास के कई देशों में भी हिंदी बोली जाती है। इतना ही नहीं हिंदी दुनिया की तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी के महत्व को दुनियाभर में बढ़ाने के लिए हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। वहीं हर साल 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने साल 1975 में पहला विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया था, जिसमें 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया था। यह सम्मेलन महाराष्ट्र के नागपुर में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में हिंदी को विश्व स्तर पर सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक के रूप में मान्यता देने और अंतर्राष्ट्रीय चर्चा में इसके उपयोग को बढ़ावा देने को लेकर चर्चा की गई थी।

10 जनवरी 2006 को पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने पहली बार विश्व हिंदी दिवस मनाया था। तब से हर साल 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस बार विश्व हिंदी दिवस का विषय 'एकता और सांस्कृतिक गौरव की वैश्विक आवाज' रखा गया है। जिसका उद्देश्य भाषाई और अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान के लिए हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देना है।

भाषा की समृद्ध विरासत, साहित्य पर हिंदी के प्रभाव और डिजिटल दुनिया में इसकी बढ़ती उपस्थिति का जश्न मनाने के लिए जगह जगह सेमिनार, वर्कशॉप और कई तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हिंदी सिर्फ भाषा ही नहीं बल्कि संस्कृति है। भले ही आज इंग्लिश का चलन तेजी से बढ़ रहा हो, लेकिन हिंदी भी दुनियाभर में फैल रही है। हिंदी के बढ़े महत्व और प्रसार को इसी बात से समझा जा सकता है कि जब संयुक्त राष्ट महासभा में हिंदी में कोई स्पीच दी जाती है तो पूरी दुनिया उसके लिए जमकर तालियां बजाती है। इसलिए बेझिझक होकर हिंदी बोलिए और हिंदी भाषी होने पर आप गर्व करिए।

## पूजास्थल कानून से जुड़ी याचिकाओं संग नहीं होगी संभल के कुएं की सुनवाई, SC ने मस्जिद कमेटी की मांग ठुकराई

संभल की मस्जिद कमेटी ने सुप्रीम कोर्ट से कुएं मामले की सुनवाई को पूजा स्थल से संबंधित याचिकाओं के साथ संलग्न करने की मांग की। मगर सुप्रीम कोर्ट ने इसे ठुकराया दिया। उधर संभल जिला मजिस्ट्रेट को नोटिस जारी करके स्टेटस रिपोर्ट मांगा है। जिला मजिस्ट्रेट को दो हफ्ते में स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करनी होगा। मस्जिद कमेटी ने याचिका में शीर्ष अदालत से यथास्थिति बनाए रखने की मांग की थी।

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने संभल में शाही जामा मस्जिद के बाहर सीढ़ियों के पास स्थित कुएं के बारे में यथास्थिति बनाए रखने की मस्जिद कमेटी की मांग पर नोटिस जारी करते हुए कुएं के बारे में जिला मजिस्ट्रेट से दो सप्ताह में स्थिति रिपोर्ट मांगी है।

इसके साथ ही कोर्ट ने आदेश दिया है कि मस्जिद के बाहर सीढ़ियों के पास स्थित कुएं के बारे में नगर पालिका परिषद का अगर कोई नोटिस है तो वह प्रभावी नहीं होगा यानी जिला प्रशासन उस पर अमल नहीं करेगा।

ये आदेश प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना और संजय कुमार की पीठ ने संभल की शाही जामा मस्जिद प्रबंध कमेटी की अर्जी पर शुक्रवार को दिए। मस्जिद कमेटी ने निचली अदालत के सर्वे आदेश के खिलाफ दाखिल विशेष अनुमति याचिका के मामले में ही एक नयी अर्जी दाखिल कर मस्जिद के बाहर सीढ़ियों के पास स्थित कुएं के संबंध में यथा स्थित बनाए रखने का आदेश मांगा है।

शुक्रवार को मस्जिद कमेटी की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता हुजैफा अहमदी और फुजैल अहमद अयूबी पेश हुए। हुजैफा ने दलीलें रखनी शुरू ही कीं थी क प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि अगर कुआं खुला है और सार्वजनिक है तो सभी लोग उसका प्रयोग कर सकते हैं और वहां सीसीटीवी लगाने का आदेश दिया जा सकता है। हुजेफा ने कहा कि वह कुआं सार्वजनिक नहीं है और न ही खुला हुआ है। लेकिन पीठ ने बीच में ही टोकते हुए कहा कि आपकी अर्जी में ही लिखा है कि कुआं कुछ खुला कुछ बंद है। उसमें एक पंप लगा हुआ है। हुजैफा ने कहा कि पंप से मस्जिद में पानी जाता है जिसका वहां प्रयोग होता है।

## जहाज निर्माण और मरम्मत का हब बनेगा पारादीप, 4 हजार करोड़ का होगा निवेश

**मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा**

**भुबनेस्वर :** पारादीप बंदरगाह के पास एक जहाज निर्माण और मरम्मत केंद्र स्थापित किया जा रहा है। इस संबंध में राज्य सरकार ने 4 हजार करोड़ की मदद का ऐलान किया है।इसी तरह, भद्रक के इंचुडी और दक्षिण ओडिशा के बाहुदा में 2 नए बंदरगाहों के निर्माण में भी निजी क्षेत्र की साझेदारी से तेजी लाई जाएगी।उद्योग सचिव हेमंत कुमार शर्मा ने बताया कि सरकार खनिज और कोयले के परिवहन में तेजी लाने के लिए रेलवे ट्रैक बिछाने में भी रुचि रखती है।

श्री शर्मा ने कहा, 2026 तक राज्य की हरित हाइड्रोजन विनिर्माण सुविधा से इसका उत्पादन होने की उम्मीद है। पारादीप पोर्ट अथॉरिटी (पीपीए) के सहयोग से एक जहाज निर्माण और मरम्मत केंद्र स्थापित किया जाएगा। प्रस्तावित 2 बंदरगाहों की क्षमता 40 मिलियन टन होगी। इसी प्रकार, कंपनियों को राज्य में ग्लोबल डेटा सेंटर और ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। अब जीसीसी नीति और डेटा सेंटर नीति तैयार की जा रही है। श्री शर्मा ने बताया कि भुवनेश्वर के दक्षिणी भाग में 250 एकड़ में इलेक्ट्रॉनिक सिटी बसाने का लक्ष्य है। राज्य कच्चे माल के परिवहन में तेजी लाने के लिए अधिक निवेश के लिए भी कार्यक्रम चला रहा है। प्रमुख परियोजनाओं को समय पर पूरा करने का लक्ष्य है।हरिदासपुर-पारादीप रेलवे लाइन का दोहराव किया जा रहा है।

राज्य परियोजना को लागू करने के लिए गठित विशेष प्रयोजन वाहन (एसपीवी) में इक्विटी धारक है। राज्य आवश्यकता के आधार पर विशिष्ट इक्विटी प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। श्री शर्मा ने उल्लेख किया कि वर्तमान रेल गलियारा कोयला परिवहन मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त है।

# इंटरनेट के दौर में कम हो रही है पठनीयता !

आज सोशल मीडिया का दौर है। सूचना क्रांति के इस दौर में आज पठनीयता का अभाव हो गया है। आज से दस-बीस बरस पहले लोग जितने अखबार और पत्र-पत्रिकाएं पढ़ा करते थे, आज शायद उतना कोई नहीं पढ़ता है। पुस्तकालय में जाकर तो आज कोई व्यक्ति पुस्तक, पत्रिका या अखबार इश्यू करवाकर तो शायद ही पढ़ता होगा, क्यों कि आज विभिन्न पठनीय सामग्री इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर आसानी से उपलब्ध हो जाती है।आज के जमाने में विभिन्न ई-बुक्स, ई-पत्रिकाएं, ई-अखबार आसानी से कहीं भी, कभी भी उपलब्ध हो जाते हैं, बशर्ते कि वहां इंटरनेट की उपलब्धता हो। पढ़ना बहुत ही जरूरी है, क्यों कि पढ़ने से ज्ञान की प्राप्ति होती है और किसी लेखन सामग्री को हार्ड कापी के रूप में पढ़ने का आनंद और अनुभूति तो कुछ अलग ही होती है। आज हम लाइब्रेरी में पुस्तकें देखते हैं लेकिन बुक इश्यू करवाकर पढ़ना पसंद नहीं करते। सबकुछ इंटरनेट पर ही पढ़ना चाहते हैं। टीवी और मल्टीप्लेक्स युग के कारण भी आज पत्र-पत्रिकाओं पर खतरा पैदा हुआ है। यहां तक कि आज विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं, पुस्तकें आडियो रूप में भी हमें उपलब्ध होने लगीं हैं, लेकिन जो आनंद की अनूभूति किसी पत्र-पत्रिका, अखबार, पुस्तक को हाथ में लेकर पढ़ने से होती है, वह शायद इंटरनेट पर कभी नहीं हो सकती है। आज ई बुक, फ्लिप फॉर्मेट, पीडीएफ में सॉफ्ट स्वरूप में विभिन्न सामग्री पढ़ने को मिल जाती है, लेकिन कोई भी लगातार इंटरनेट पर इन सामग्रियों को उस रूप में नहीं पढ़ पाता है, जितना कि उन्हें हाथ में फिजिकल रूप से अपने समक्ष लेकर पढ़ता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि पिछले कुछ सालों में लेखन और अभिव्यक्ति की शैली बहुत ही तेजी से बदली है। आज लेखकों द्वारा माइक्रो ब्लागिंग की जा रही है। लेखक आज लेखन के लिए इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ई-मेल का प्रयोग करने लगे हैं। कोई भी लेखक आज काग़ज़ कलम हाथ में लेकर नहीं लिखता, क्यों कि लेखन को इंटरनेट, ई-मेल, सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने काफी आसान बना दिया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज नई पीढ़ी में पठनीयता का तेजी से ह्रास हुआ है। आज मुद्रण भी एक चुनौती है, क्यों कि मुद्रण के लिए अर्थ यानी कि धन या वित्त की भरपूर आवश्यकता होती है। सच तो यह है कि आज पत्र-पत्रिकाओं के ई-वर्जन आ चुके हैं। आज शायद ही पहले की तरह हस्त लिखित और सायक्लोस्टाईल

पत्रिकाएं आतीं हैं। आज की युवा पीढ़ी तो वैसे भी हाथ से लिखने और किसी पुस्तक को प्रत्यक्ष अपने हाथों में लेकर पढ़ने की आदी नहीं रही, क्यों कि उन्हें इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स से ही फुर्सत नहीं है। समय के साथ पठनीयता में बहुत बदलाव आ चुके हैं।वास्तव में, पठनीयता शब्द से तात्पर्य उन सभी कारकों से है जो किसी पाठ को पढ़ने और समझने में सफलता को प्रभावित करते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि पठनीयता को पाठक की रुचि और प्रेरणा, प्रिंट की पठनीयता (तथा किसी भी चित्र की), पाठक की पठन क्षमता के संबंध में शब्दों और वाक्यों की जटिलता जैसे कारक खासतौर पर प्रभावित करते हैं। आज पाठकों में पढ़ने के प्रति रूचि का अभाव है, क्यों कि आज मनोरंजन के अनेक साधनों का विकास हो चुका है। टीवी, मल्टीप्लेक्स, सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने कहीं न कहीं पठनीयता पर व्यापक असर डाला है। पहले की तुलना में अब काग़ज़ के इस्तेमाल पर भी जोर कम हो गया है। विभिन्न कार्यालयों में, कंपनियों में आज सभी काम इंटरनेट के माध्यम से सम्पन्न होते हैं। ई-आफिस, ई-फाइल का कंसेप्ट आज आ चुका है। मुद्रण, टाइपिंग का अब जमाना लगभग लगभग जा चुका है और हम लगातार पुस्तकों, अखबारों, पत्रिकाओं के ई-वर्जन, आडियो वर्जन की ओर बढ़ने लगे हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के जमाने में साहित्यिक किताबों, अखबारों की मुद्रण संख्या में अभूतपूर्व कमी हुई है। आज आडियो बुक्स सुनीं जातीं हैं, हार्ड नहीं बल्कि साफ्ट कापियां आज आदमी के जीवन का अहम् और महत्वपूर्ण हिस्सा होती चली जा रहीं हैं। पुस्तकों के किंडर वर्जन आज उपलब्ध हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि समय के साथ पढ़ने-लिखने के तरीकों में आमूल-चूल परिवर्तन हुए हैं। कहते हैं कि परिवर्तन संसार का नियम है और आदमी को जमाने के साथ चलना पड़ता है। निश्चित ही इससे हमारे पर्यावरण की रक्षा, संरक्षण की ओर एक कदम जरूर बढ़ा है, लेकिन यह भी सत्य ही है कि आज पहले के जमाने सी पठनीयता पाठकों में नहीं रही। स्क्रीन हमारे मन-मस्तिष्क, हमारे स्वास्थ्य पर कितना बुरा प्रभाव डालतीं है, यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है। सूचना क्रांति के इस दौर में हम लेखन-पाठन के क्षेत्र में निश्चित ही बहुत आगे बढ़ गये हैं, हमें ऐसा लगता है। लेकिन जो ज्ञान हमें किताबों, अखबारों, पत्रिकाओं को हार्ड कापी में लेकर पढ़ने से मिलता है, वह मेरे विचार से हमारे मन-मस्तिष्क में अधिक समय तक स्थाई रहता है। इससे हमें आनंद की कहीं अधिक अनुभूति होती है। साथ ही साथ पुस्तकों, अखबारों, पत्रिकाओं से हमारा एक आत्मीयता का रिश्ता भी जुड़ता है।हार्ड कापी में कोई किताब, अखबार, पत्रिका पढ़कर हम कहीं अधिक चिंतन-मनन में डूबते हैं, स्क्रीन पर पढ़ना थोड़ा ऊबाऊ सा होता है और कोई भी अधिक देर तक स्क्रीन पर नहीं पढ़ सकता। साफ्ट कापी (स्क्रीन पर) में हम अक्सर पढ़ते तो हैं, पठनीय सामग्री भी बहुत अधिक मात्रा में उपलब्ध रहतीं हैं, इंटरनेट से कोई भी साहित्यिक सामग्री को पल में खंगाला जा सकता है, लेकिन मेरे विचार से ऐसा करने से इन साहित्यिक सामग्री से पाठक का वह आत्मीयता का रिश्ता नहीं जुड़ पाता है, जो कि प्रत्यक्ष रूप से किसी साहित्यिक सामग्री को पढ़ने से जुड़ पाता है। यह भी एक तथ्य है कि महंगाई के इस दौर में आज किताब खरीदना पाठकों की जेब पर भारी पड़ रहा है, ई-बुक्स, ई-पत्रिकाएं, ई-अखबार आसानी से और कम कीमत में उपलब्ध हो जाते हैं।यह एक विडंबना ही है कि आज के समय में विरले ही किसी घर में पुस्तकों और पत्रिकाओं के लिए जगह बची है, क्यों कि रूचि का अभाव हो गया है। सबकुछ एंड्रॉयड मोबाइल की गिरफ्त में आ चुका है, पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं, अखबार तक उसमें शामिल हैं। हमें आज जरूरत इस बात की है कि हम पढ़ने के प्रति रूचि पैदा करें, विशेषकर पुस्तकालयों में जाकर, घर में, सफर के वक्त हार्ड कापी में चीजों को पढ़ें, स्क्रीन संस्कृति से दूर। बहरहाल, सच यह है कि आज साहित्य की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि पठनीयता के अभाव को समाप्त करने के लिये पाठक व लेखक के बीच बड़ी होती जा रही खाई को पाटना बहुत ही जरूरी व आवश्यक हो गया है।

**सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।**

## घातक दुर्घटना, 4 ओडियानियों की मौत

**मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा**

**भुबनेस्वर:** तेलंगाना के सूर्यापेट-खमम रोड पर आज सुबह एक भीषण हादसा हो गया। ट्रक के पीछे बस के टकराने से हुए इस हादसे में 4 उड़िया लोगों की मौत हो गई। बताया गया है कि इनमें 2 महिलाएं भी हैं।कालाहांडी के सिनापाली से 32 श्रमिकों को लेकर एक बस कल हैदराबाद के लिए रवाना हुई।बस सुबह करीब 3 बजे सूर्यापेट-खमम रोड पार कर रही थी। उस वक्त सड़क पर एक ट्रक खड़ा था तभी एक तेज रफ्तार बस ने उसे पीछे से टक्कर मार दी। इससे 4 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। बताया जा रहा है कि मृतकों में बस ड्राइवर, 2 महिला कर्मचारी और एक पुरुष कर्मचारी शामिल हैं। हादसे में कुछ अन्य कर्मचारी भी घायल हुए हैं और उन्हें इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। साथ ही शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

## विवेकानंद जी के आदर्शों पर चले युवा तरुणाई

**हरिहर सिंह चौहान इन्दौर**

'भारत के महान पुरुष जिन्होंने अपना पूरा जीवन नये विचारों नई कल्पनाओं को सामने रखते हुए कभी भी समझोता नहीं किया। वह हमेशा युवा तरुणाई के लिए आदर्श रहेंगे। वह राष्ट्र निर्माता युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद जी थे। जिन्होंने इंसान को मनुष्य बनाने के लिए पूर्ण रुप से अपने आप को भारत राष्ट्र को समर्पित कर दिया था। उस दौर में हिन्दुस्तान में उन्होंने जो देखा उन सभी चीजों को बड़ी बारिकी से अध्ययन करते हुए विश्व पटल पर उन्हीं सकारात्मक विचारों का जो आदान-प्रदान किया वह आज भी वर्तमान समय में भी युवा वर्ग के लिए प्रासंगिक है। वह कहते थे समस्या हर देश में होती है, पर उसका निराकरण करना हम सभी देशवासियों का फ़र्ज़ होना चाहिए। सबसे पहली प्राथमिकता राष्ट्र हो जायेगी तो समाधान के रास्ते अपने आप खुल जाएंगे। युवा वर्ग को भारत के इस महायज्ञ में अपनी अपनी आहुति देना ही होगी। क्योंकि युवा ही आत्मशक्ति से चेतन्य होते हैं। उन के आदर्श भी भेदभाव से दूर रहते हैं, इसलिए नवजागरण में युवाओं की अपनी सार्थक भूमिका का आज भी है और कल भी रहेगी। विश्व निर्माण के इस दौर में घृणा ईष्य राग-द्वेष या मतभेद और मन की पवित्रता बंधनों से मुक्त रहने में अश्वमेध यज्ञ के समान सिद्ध होगा। इसलिए युवा वर्ग को मेहनत लगन से आगे बढ़ना होगा। उठों जागो क्योंकि अब भारत भी जाग उठा है। विचारों की लालिमा से अपने देश का व अपने मनुष्य धर्म का कर्त्तव्य निभाओ, बड़ों आगे नव जागरण के पंथ पर तुम बढ़ते चले जाओ। भारत के युवा वर्ग को अपनी शिक्षा साहित्य कला अर्थनीति राजनीति के साथ-साथ धार्मिक आर्दशों की सुरक्षा इन्हें ही करनी चाहिए तभी नव उदय होगा। युवा वर्ग कभी भी खोखले धरातल यानि बालू पर राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकता। उसके लिए एक ठोस व मजबूती से भरी सोच होनी चाहिए, जिससे युवा वर्ग का चरित्र निर्माण हो सके। शिक्षा से उन को श्रेष्ठ मानवीय रुप उन्हें जरूर मिलता है पर बुद्धि विकसित नहीं हो पातीं है इसके लिए संवाद के बल पर बातचीत से ही मनुष्य बना जा सकता है इसलिए युवा वर्ग को नैतिक मूल्यों के साथ राष्ट्र निर्माण की सार्थक सोच रखनी ही होगी तभी युवा दिवस मानने की सार्थकता सही दिशा में पूरी हो सकती है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023